HP/48/SML (upto 31-12-2020) Pre Paid RNI No. HPHIN/2001/04280

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार www.matrivandana.org

मातृवन्दना

माघ-फाल्गुन, युगाब्द 5121, फरवरी 2020

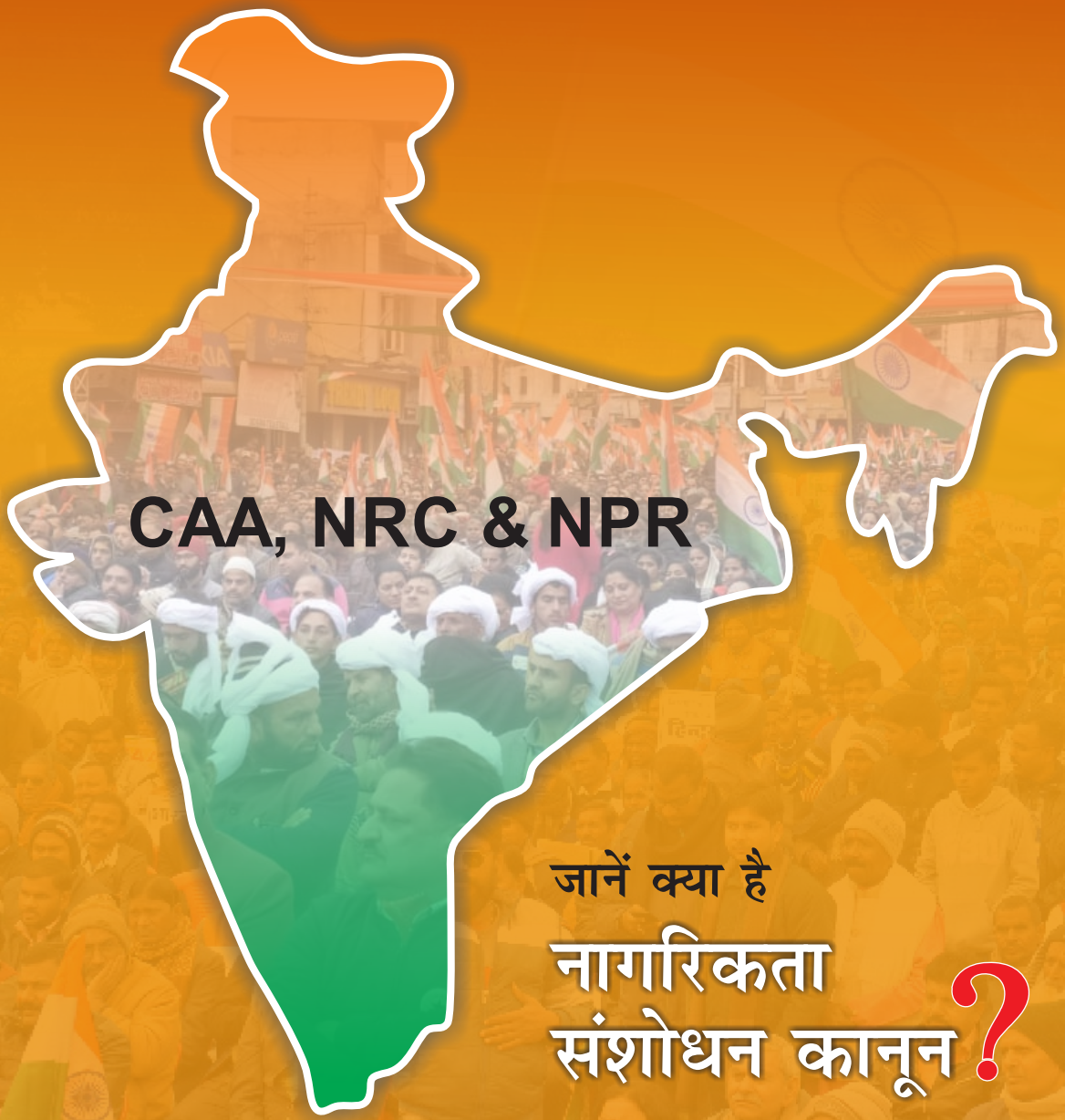

CAA, NRC & NPR

जानें क्या है

नागरिकता संशोधन कानून?

मूल्यः 20/- प्रति

मातृवन्दना

सदस्यता अभियान 2020-21

1-15 फरवरी 2020

बहुमूल्य सामग्री एवं सुन्दर कलेवर के साथ पाठकों की सेवा में समर्पित

हिमाचल की सर्वाधिक प्रसार वाली पत्रिका	सर्वाधिक स्थानों तक पहुंच
35 हज़ार परिवारों तक पहुंच	दो लाख से अधिक पाठक
नववर्ष का आकर्षक कैलेण्डर नि:शुल्क	समाचार ही नहीं संस्कार भी

पढ़ें देवभूमि के सब परिवार, जगे देशभक्ति मिले संस्कार

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

प्रबन्धक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष : 0177-2836990 **7650000990**

email: matrivandanashimla@gmail.com

website: www.matrivandana.org

वार्षिक शुल्क

100 रुपए

आजीवन सदस्य (15 वर्ष)

1000/- रुपए

नियमित पाठकों से निवेदन है कि अपनी सदस्यता का नवीनीकरण उपर्युक्त समय पर अवश्य करवाएं।

आप भी इसके सदस्य व वितरक बनकर समाज में स्वच्छ व राष्ट्रीय विचारों के प्रचार में सहभागी बनें।

सूचना

वर्ष 2020-21 में मातृवन्दना पत्रिका प्रकाशन के 26 वर्ष पूरे होने पर 2020 का वर्ष प्रतिपदा प्रकाशित करने की योजना बनी है। अत: लेखकों एवं कवियों से निवेदन है कि अपने लेख व कविताएं 10 मार्च 2020 तक मातृवन्दना सम्पादकीय कार्यालय में हस्तलिखित या टाईप करवाकर डाक या मेल द्वारा निर्धारित तिथि तक अवश्य भेज दें।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

सम्पादक, मातृवन्दना

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

दूरभाष: 0177-2836990 मो. 9805036545

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

मातृवन्दना पत्रिका में विज्ञापन प्रकाशित करने हेतु सम्पर्क करें:

विज्ञापन प्रबंधक: मो.न. 83510-92947

दूरभाष: 0177-2836990

डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाऊस, शिमला - 171 004,

email: matrivandanashimla@gmail.com | website: www.matrivandana.org

वर्ष: 20 अंक : 2 | माघ-फाल्गुन कलियुगाब्द 5121, फरवरी, 2020

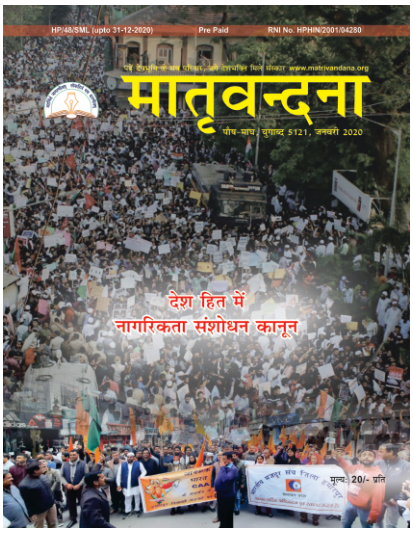

सम्पादक

डॉ. दयानन्द शर्मा

सह-सम्पादक

वासुदेव शर्मा

सम्पादक मण्डल

मीनाक्षी सूद
डॉ. अर्चना गुलेरिया
डॉ. उमेश मौदगिल
डॉ. जय कर्ण

पत्रिका प्रमुख

शांति स्वरुप

वितरण प्रमुख

जय सिंह ठाकुर

कार्यालय:

मातृवन्दना, डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-4, दूरभाष: 0177-2836990

E-mail: matrivandanashimla@gmail.com, Web.: www.matrivandana.org

प्रकाशक एवं मुद्रक: कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट नं. 820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित। **सम्पादक: डॉ. दयानंद शर्मा।**

मासिक शुल्क	₹20
वार्षिक शुल्क	₹100
आजीवन शुल्क	₹1000

वैधानिक सूचना: पत्रिका का सम्पादकीय कार्य पूर्णत: अवैतनिक है। पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरुरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

संपादकीय	नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में	5
चिंतन	राजधर्म पर हावी राजनीति	6
प्रेरक प्रसंग	सफलता की कुंजी	7
आवरण	मानवता का ठौर भारत	8
देश-प्रदेश	प्रदेश में खोले जाएंगे 1000 गो सदन	12
देवभूमि	पर्यटन स्थल फागू के नजदीक बनेगी	14
विश्वदर्शन	वर्तमान में वोटरशिप के मायने	16
घूमती कलम	एडवांस स्टडीज से सीखें जल संरक्षण	18
स्वास्थ्य	हल्दी, शहद, कालीमिर्च, दालचीनी	20
कृषि जगत	प्रकृति और गाय का बड़ी निष्ठा एवं	21
दृष्टि	नव वर्ष पर मंत्री द्वारा 'बुके' लेने से	22
काव्य जगत	हम बेटियां	23
प्रतिक्रिया	अगले साल येरुशेलम में	24
समसामयिकी	जेएनयू तर्कहीन विरोध की राजनीति	26
पुण्य समरण	चम्बल घाटी शान्ति मिशन के सर्वोदयी	28
संगठनम	नागरिकता संशोधन कानून पर आयोजित	29
विविध	CAA मामला उतना सीधा भी नहीं	30
महिला जगत	डॉ. अंजलि वर्मा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित	31
बाल जगत	कर्तव्य	33

पाठकीय...

सम्पादक महोदय,

कहा जा रहा है कि कोई पंथनिरपेक्ष देश नागरिकता देने के मामले में पांथिक आधार पर विचार नहीं करता। जो अमरीका का उदाहरण लेते हैं, वहां नागरिकता दिए जाते समय 'वास्प' डब्लूएएसपी कसौटी का पालन किया जाता है। यानी **वाइट एंग्लो सैक्सन प्रोटेस्टेंट**-वे लोग जो उत्तरी यूरोप से आने वाले श्वेत प्रोटेस्टेंट हैं, उन्हें प्राथमिकता दी जाती है। शेष लोगों को नागरिकता कानून के अंतर्गत 15 वर्ष निवास की अवधि पूरी करनी होती है, बाद में उनका सांस्कृति करण यानी देशज संस्कृति में रंगने का काम किया जाता है। वास्प समुदाय अमरीकी जीवन के साथ शीघ्र एकरूप हो जाता है, कोई समस्या पैदा नहीं करता, अत: वह प्राथमिकता पाने वाला समुदाय है। इसी प्रकार भारत के मामले में वही स्थिति हिन्दू एवं यहां उत्पन्न अन्य मतों, जैन-बौद्ध-सिख की है। ये सभी भारत को पुण्यभूमि मानते हैं। इससे भावात्मक सम्बन्ध महसूस करते हैं। पारसी भी 1400 साल से हिंदुस्थान से गहरा लगाव प्रगट करते आ रहे हैं। उनके व्यवहार से यह सिद्ध होता रहा है। वैसे भी ये पाकिस्तान, बांग्लादेश, अफगानिस्तान जैसे घोषित इस्लामी देशों में वर्षों से मजहबी अत्याचार सहते आ रहे हैं। ईसाई भी उत्पीड़न के शिकार होकर इन तीन इस्लामी देशों से भगाए जाते हैं। मुसलमानों को तो इस्लामी मुल्कों में किसी मजहबी अत्याचार का शिकार बनना नहीं पड़ता। उपरोक्त 6 समुदाय तो वहां से भगाए जाते हैं। पर मुस्लिम घुसपैठिए स्वेच्छा से हमारे यहां घुस आते हैं। इनके इरादे भी नेक नहीं होते। क्या इस देश से कोई प्यार है उन्हें? वस्तुत: राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु खतरा पैदा करने का उनका स्वभाव दिखता है और योजना दिखती है। ◆◆◆ **पूनम मित्तल**

महोदय,

निजी स्वार्थ हितों के लिए बाल मन का उपयोग अच्छा नहीं, पूरा देश अपने गणतंत्र दिवस के अवसर 49 बहादुर एवं प्रतिभाशाली बच्चों के सम्मान करने वाला है। उनकी प्रतिभा को देश के प्रत्येक युवा तक पंहुचाने के लिए तैयार है। इसके विपरीत दिल्ली के शाहीन बाग में तथाकथित संविधान की दुहाई देने वाली मानसिकता गत दिसम्बर मास से देश के बाल मन में जहर भरने का काम कर रही है। बच्चों को पाठशाला से दूर रखकर सी.ए.ए. , एन.आर.सी. के नाम गुमराह किया जा रहा है। आजादी के विवादित स्वर, जो कभी देश के सर्वोच्च शिक्षण संस्थानों में सुनने में आए थे, वैसे ही स्वर शाहीन बाग के इलाके में इन छोटे -छोटे बच्चों मुख से बुलवाए जा रहे हैं। यह सब अफवाहों का परिणाम है। महिलाएं शिफ्टों में इन प्रदर्शनों में शामिल हो रही हैं। देश विरोधी ताकतें जो आज अपना स्वार्थ सिद्ध न हो सकने के कारण हताशा में हैं, इस प्रकार के प्रदर्शनों को हवा देती दिखती हैं। स्थिति यह है कि प्रशासन व पुलिस स्वयं को असहाय सा महसूस कर रहे हैं। मीडिया के कुछ चुनिंदा पत्रकारों को ही वहां जाने की इजाजत है। तमाम राजनीतिक दल अपने स्वार्थ के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आग में घी डालने काम कर रहे हैं। बाल मन का उपयोग निजी हितों के लिए करना अच्छी बात नहीं है। इस प्रकार के षडयन्त्रों का विरोध होना चाहिए। प्रत्येक नागरिक के लिए देश हित सर्वोपरि होना चाहिए। देश रहेगा तो सभी दलों का अस्तित्व रहेगा। लोकतंत्र फलेगा-फूलेगा। सज्जन शक्ति जिसके बल पर समाज देश चलता है, को आगे आकर भ्रमित लोगों का मार्गदर्शन करना चाहिए। भ्रमित करने वाली शक्तियों को बेनकाब कर विषय की सच्चाई को सामने लाना चाहिए। किसी को भी सामाजिक ताने-बाने को तोड़ने का अवसर नहीं देना चाहिए। सरकार को भी चाहिए कि असामाजिक तत्वों की पहचान कर संवेदनशीलता से इस समस्या का हल निकाले। ◆◆◆ **जोगिन्द्र ठाकुर गाँव व डाकघर भल्यानी कुल्लू**

फरवरी माह के शुभ मुहूर्त की तिथियां

तारीख	दिन	तिथि	नक्षत्र
3 फरवरी	सोम	दशमी	रोहिणी
9 फरवरी	रवि	प्रतिपदा	मघा
11 फरवरी	मंगल	चतुर्थी	उत्तराफाल्गुनी
12 फरवरी	बुध	चतुर्थी	उत्तराफाल्गुनी, हस्त
16 फरवरी	रवि	अष्टमी	अनुराधा
18 फरवरी	मंगल	एकादशी	मुला
25 फरवरी	मंगल	द्वितीय, तृतीय	उत्तर भाद्रपद
26 फरवरी	बुध	तृतीय, चतुर्थी	उत्तर भाद्रपद, रेवती
27 फरवरी	गुरू	चतुर्थी	रेवती

शिकायत व सुझाव के लिए सम्पर्क करें अथवा लिखें

0177-2836990 7650000990

ई-मेल: matrivandanashimla@gmail.com

सभी सुधी पाठकों व विज्ञापनदाताओं को महाशिवरात्रि, होली की हार्दिक शुभकामनाएं।

स्मरणीय दिवस (फरवरी)

श्री गुरू रविदास जयंती	9 फरवरी
आरोग्य सप्तमी	10 फरवरी
कुंभ संक्रांति	13 फरवरी
रामकृष्ण परमहंस जन्मदिवस	16 फरवरी
चैतन्य महाप्रभु जन्मदिवस	18 फरवरी
महाशिवरात्रि	21 फरवरी
आम्लकी एकादशी	6 मार्च
होलिका दहन	10 मार्च
होली	11 मार्च

नागरिकता संशोधन कानून के विरोध में आन्दोलन का विकृत चेहरा

विश्व के स्वतन्त्र एवं सम्प्रभु राष्ट्र अपने अपने देश के संविधान के अनुसार ही शासन व्यवस्था चलाते हैं। समय के अनुसार परिस्थितिवश प्रजा के हित में क्या और कैसी व्यवस्था अपेक्षित है इसकी समुचित व्यवस्था करना सरकारों का अधिकार एवं जिमेदारी होती है। अपने देशवासियों के मान सम्मान और उनकी चहुंदिश रक्षा की जिम्मदारी भी सरकार की होती है। इस दृष्टि से सरकारों को समाजहित में समय सापेक्ष और आवश्यकतानुसार संविधान में संशोधन की आवश्यकता महसूस होती है तो इस प्रक्रिया में सभी विपक्षी दलों को गुणदोष के आधार पर सरकार की मदद करनी चाहिए। संविधान में किए जाने वाले ऐसे संशोधन यदि शुद्ध रूप से राष्ट्रहित में हैं तो ऐसी स्थिति में विपक्षी राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी ज्यादा अहम हो जाती है। आजकल ठीक ऐसी ही स्थिति देश में जानबूझकर खड़ी कर दी गई है। दुर्भाग्य यह है कि भारत के अधिकांश विपक्षी दल संविधान में किये गए सीएए प्रावधान पर पार्टी गत हित देख रहे हैं, उन्हें राष्ट्र से कुछ लेना देना नहीं है।

नागरिकता संशोधन कानून के दोनों सदनों में पारित होने के पश्चात् उसके विरोध में प्रायोजित विरोध प्रदर्शनों से कांग्रेस तथा वामपंथियों सहित पूरे विपक्ष की राजनीति का विकृत चेहरा उभर कर सामने आया है। इस कानून तथा लागू किये गये एन.आर.सी के विरोध के बलबूते मुसलमानों को अपनी ओर आकृष्ट करने का विपक्ष को सुनहरा मौका हाथ लग गया है जिसको तुष्टीकरण की राजनीति करने वाले दलों के नेता आगामी चुनावों में लाभ लेने के अवसर के रुप में देख रहे हैं। इसलिए सम्पूर्ण विपक्षी दल साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति अपनाकर भारतीय मुस्लमानों को गुमराह करने तथा उन्हें उकसाने की जी-तोड़ मेहनत कर रहा है तथा विरोध प्रदर्शनों में जुटे छात्र , महिला-पुरुष आदि सभी की आर्थिक रूप से भी मदद कर रहा है। यह बड़े दुर्भाग्य का विषय है कि केन्द्र सरकार द्वारा बार-बार यह स्पष्टीकरण देने पर भी कि भारतीय मुस्लमानों को सीएए तथा एन.आर.सी से किसी भी प्रकार का नुकसान नहीं, फिर भी उनमें विद्रोह की आग भड़काई जा रही है। पांचवी कक्षा तक के अबोध छात्र-छात्राओं को स्कूल जाने की बजाय आन्दोलन एवं धरनों में सम्मिलित कर उनसे रटे-रटाये बयान मीडिया के समक्ष दिलाये जा रहे हैं। प्रतिष्ठित उच्च शिक्षा संस्थानों जे.एन.यू, जामिया मिलिया तथा कई अन्य विश्वविद्यालयों में गहरी साजिश के तहत विद्यार्थियों का एक वर्ग अध्ययन से विरत हो भीड़तन्त्र का हिस्सा बन सड़क पर उतर आये हैं, इससे बड़ी विडम्बना क्या हो सकती है। नागरिकता कानून के खिलाफ दुष्प्रभाव इस कदर बढ़ चुका है कि टुकड़े-टुकड़े गैंग के कश्मीर की आजादी के पोस्टर भी इन राष्ट्रविरोधी प्रदर्शनों में दिखाई देने लगे हैं। देश को तोड़ने, विखण्डित करने, सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाने और लोगों को डराने-धमकाने की कुचेष्टाओं एवं षड्यन्त्रों को अब समझने की जरूरत है। कश्मीर, पश्चिम बंगाल तथा कई अन्य राज्यों में सब देख रहे हैं कि प्रलोभन देकर, भड़काकर, अफवाहें फैलाकर किस प्रकार आम जनता को गुमराह किया जा रहा है।

नागरिकता संशोधन कानून की जरूरत क्यों पड़ी, इसका ताजातरीन उदाहरण ननकाना साहिब पर हमला है जो अल्पसंख्यकों के प्रति पाकिस्तान की संवेदन हीनता को प्रकट करता है। वस्तुतः मुस्लिम बहुल पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यकों की दयनीय स्थिति है। स्वयं वे और उनके परिवार वहां डर-डर कर जी रहे हैं। जबरदस्ती मतान्तरण और बहु-बेटियों की असुरक्षा से वे चिन्तित हैं। उन्हें अपने क्षेत्र में शरण देना अथवा नागरिकता प्रदान करना इन्सानियत का तकाजा है। भारत के निवासी मुस्लमानों को कौन भारत से निर्वासित कर सकता है? यह उनका अपना देश है। विपक्ष के झांसे में उन्हें नहीं आना चाहिए, राजनीतिक दलों का भी यह कर्तव्य बन जाता है कि देश की एकता व अखण्डता के लिए भारतीय जन-मानस को एकसूत्रता में बांधने का प्रयास करें। उन्हें विभाजित करने का दुस्साहस अन्ततः देश के लिए घातक सि) हो सकता है।

राजधर्म पर हावी राजनीति

–राकेश सैन

कैप्टन अमरेन्द्र सिंह राजनीति के चलते इतने विवश हो चुके हैं कि अपने परिवार की महान परम्पराओं विशेषकर अपनी माताश्री द्वारा दिए गए संस्कारों के खिलाफ चलते दिखाई देने लगे हैं। अमरेन्द्र सिंह पटियाला राजघराने के वारिस हैं और उनकी माताश्री राजमाता मोहिन्द्र कौर केवल राजमाता के अलंकार को धारण करने वाली ही नहीं थीं, बल्कि उन्होंने अपनी पदवी के अनुरूप हर अवसर पर 'राजमाता' के धर्म का पालन किया। बात चाहे राज–पाट का कामकाज संभालने की हो या देश विभाजन के समय पीड़ितों की सहायता करने, लोकतन्त्र के पक्ष में आवाज उठाने की या फिर परिवार की मुखिया होने के नाते सदस्यों का मार्गदर्शन करने का उनका वात्सल्य व जिम्मेवारी का भाव सदैव मुखरित हो कर सबके सामने आया।

राजमाता ने पाकिस्तान से लुट–पिट कर आए हजारों हिन्दू–सिखों को गले से लगाया लेकिन मुख्यमन्त्री ने विधानसभा में नागरिकता संशोधन विधेयक के खिलाफ प्रस्ताव पारित करवा कर के पाकिस्तान, बंगलादेश व अफगानिस्तान से आने वाले दुखी हिन्दू–सिखों के जख्मों पर नमक छिड़कने का काम किया है। बात करते हैं राजमाता मोहिन्द्र कौर की, अगस्त 1938 में 16 वर्ष की आयु में उनकी शादी पटियाला के महाराजा सरदार यादविन्द्र सिंह के साथ हुई। संयोग से उनकी पहली पत्नी का नाम भी मोहिन्द्र कौर था जिसके चलते परिवार के लोग इन्हें अलग पहचान देने के लिए मेहताब कौर के नाम से बुलाने लगे, परंतु अन्त तक उनकी सार्वजनिक पहचान मोहिन्द्र कौर के रूप में ही रही। इनकी पहली सन्तान श्रीमती हेमइन्द्र कौर (धर्मपत्नी पूर्व विदेश मन्त्री श्री नटवर सिंह), दूसरी संतान रूपइन्द्र कौर, मार्च 1942 में कैप्टन अमरेन्द्र सिंह और 1944 में सरदार मालविन्द्र सिंह के रूप में चौथी सन्तान हुई।

देश के विभाजन के बाद यह लोग किसी न किसी तरह भारत नहीं आ पाए थे। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार ने ऐतिहासिक भूल में सुधार करते हुए 31 दिसम्बर, 2014 तक भारत आ चुके इन शरणार्थियों को नागरिकता देने की शर्तों में कुछ राहत दे रही है जिसका कांग्रेस सहित अनेक विपक्षी दल अन्ध विरोध कर रहे हैं। दुखद बात तो यह है कि ऐसे में पंजाब के मुख्यमन्त्री कैप्टन अमरेंन्द्र सिंह ने अपनी पार्टी की लकीर पर चलते हुए केवल इस विधेयक का विरोध ही नहीं किया बल्कि एक कदम आगे बढ़ते हुए विधानसभा में प्रस्ताव पारित करवा दिया।

एक सीमावर्ती राज्य होने के कारण पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों की पहली शरणगाह राजस्थान के साथ–साथ पंजाब ही होती है परन्तु राजनीतिक स्वार्थों के चलते मुख्यमन्त्री ने यह जानते हुए भी दुखी शरणार्थी हिन्दू–सिखों के जख्मों पर नमक छिड़का कि उनका यह प्रस्ताव पूर्ण रूप से असंवैधानिक है क्योंकि भारतीय संविधान के अनुसार, नागरिकता देने का विषय केन्द्र की कार्यसूची में शामिल है न कि राज्य सूची या समवर्ती सूची में। कैप्टन अमरेन्द्र सिंह खुद भारतीय सेना में अपनी सेवाएं दे चुके हैं और भली–भांति इस तथ्य से परिचित हैं कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के साथ कैसा व्यवहार

किया जाता है।

कानून विशेषज्ञों का कहना है कि पंजाब विधनसभा द्वारा केन्द्रीय नागरिकता संशोधन विधेयक के विरुद्ध पास किया गया प्रस्ताव असंवैधानिक तथा संविधान के मूलभूत ढांचे का उल्लंघन करता है। भारत के संविधान की धारा 256 और 257 के अनुसार प्रत्येक राज्य केन्द्र द्वारा पारित कानून को लागू करने के लिये बाध्य है। यदि वह ऐसा नहीं करता तो केन्द्र सरकार उसे दिशा निर्देश भी जारी कर सकती है। यह प्रस्ताव संविधान की उन दोनों धाराओं को चुनौती देता है। भारत के संविधान में संघीय ढांचा अपनाया है जिसके अन्तर्गत केन्द्र और राज्यों के अलग–अलग अधिकारों का स्पष्ट उल्लेख है। दोनों अपने–अपने क्षेत्रों में सर्वोच्च है और कोई भी एक दूसरे के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप नहीं करता। नागरिकता सम्बन्ध में कानून बनाना न केवल केन्द्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में आता है और संविधान की धारा 11 में इस सम्बन्ध में कानून बनाने का अधिकार केवल और केवल संसद को देता है। किसी विधानसभा या किसी राज्य सरकार का इसमें कोई दखल नहीं है। पंजाब का ये प्रस्ताव केन्द्र सरकार और संसद के अधिकारों को छीनने का प्रयास है जिसकी संविधान इजाजत नहीं देता। ◆◆◆

सफलता की कुंजी

एक किसान के चार पुत्र थे । चारों के चारों पुत्र बड़े आलसी और निकम्मे प्रवृत्ति के थे। उनके भविष्य को लेकर बेचारा बूढ़ा किसान चिंतित रहता था और पिछले कुछ दिनों से उसको अपनी तबियत भी ठीक नहीं लग रही थीं। स्वास्थ्य को लेकर अपने उसका अंदाजा बिल्कुल सही था । कुछ दिन बीते ही वह अत्यधिक बीमार पड़ गया। उसे इस बात का भी अंदेशा लगने लगा कि वह बस कुछ पल ही जीवित है, तो उससे अपने चारों पुत्रों को पास बुलाया और कहा, 'मेरी मृत्यु निकट है। अत: मैं जो कहने जा रहा हूँ उसको ध्यान से सुनों। मैंने अपना सारा धन घर के पीछे वाले खेत में दबा रखा है। मेरे मरने के बाद तुम लोग उसे निकालकर बराबर बराबर बांट लेना।' इतना कहने के बाद उस किसान के प्राण पखेरू हो गए।

चारों पुत्रों ने फटाफट खेतों में पहुंचकर उस कीमती खजाने को ढूढना शुरू कर दिया ताकि खजाना सबसे पहले उनको ही मिले। खेतों को खोदने और खजाना ढूढने का यह सिलसिला कई दिनों तक चलता रहा, पर उन्हें वहां कोई भी खजाना नहीं मिला। जिससे उन्हें बड़ी निराशा हुई। उसी गाँव का बूढ़ा सरपंच किसान का बहुत अच्छा दोस्त था। उसने किसान के पुत्रों को सलाह दी कि, जब तुम चारों ने अपना सारा खेत खोद ही डाला हैं, तो इसमें अनाज के बीज भी बो दो। इससे कुछ फसल तैयार हो जायेगी। सरपंच की सलाह मानकर पुत्रों ने बीज बो दिए। लगभग तीन महीने में ही उस खेत में सरसों की फसल लहलहाने लगी और जिसे देखकर किसान के पुत्रों का चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा। दरअसल बूढ़े किसान का असली खजाना यही था, जो अब उसके आलसी पुत्रों को भी मिल चुका था। नैतिक शिक्षा व परिश्रम सबसे बड़ा धन है। व्यक्ति परिश्रम के बल पर जीवन में अपने उन्नति और विकास के शिखर पर पहुँच सकता है। ◆◆◆

संगत का असर

एक अध्यापक अपने शिष्यों के साथ घूमने जा रहे थे। रास्ते में वे अपने शिष्यों के अच्छी संगत की महिमा समझा रहे थे। लेकिन शिष्य इसे समझ नहीं पा रहे थे। तभी अध्यापक ने फूलों से भरा एक गुलाब का पौधा देखा। उन्होंने एक शिष्य को उन पौधों के नीचे से तत्काल एक मिट्टी का ढेला उठाकर ले आने को कहा। जब शिष्य ढेला उठा लाया तो अध्यापक बोले- 'इसे अब सूंघो।' शिष्य ने ढेला सूंघा और बोला - 'गुरु जी इसमें से तो गुलाब की बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है'। तब अध्यापक बोले -- 'बच्चो! जानते हो इस मिट्टी में यह मनमोहक महक कैसे आई ?' दरअसल इस मिट्टी पर गुलाब के फूल, टूट टूटकर गिरते रहते हैं, तो मिट्टी में भी गुलाब की महक आने लगी है जो की ये असर संगत का है और जिस प्रकार गुलाब की पंखुड़ियों की संगति के कारण इस मिट्टी में से गुलाब की महक आने लगी उसी प्रकार जो व्यक्ति जैसी संगत में रहता है उसमें वैसे ही गुण-दोष आ जाते हैं । संगति का असर कहानी से सीख Moral of Story on Sangati Ka Asar : इस शिक्षाप्रद कहानी से सीख मिलती है कि हमें सदैव अपनी संगत अच्छी रखनी चाहिए। ◆◆◆

जब स्वामी विवे को पढ़ाया सहि

मानवता का ठौर भारत

••• -हितेश शंकर

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की साझा शक्ति से नागरिकता संशोधन विधेयक संसद के दोनों सदनों में पारित हो गया। विशेषकर लोकसभा में इसके पक्ष में भारी मत पड़े, उससे पूरी दुनिया के सामने यह साफ हो गया है कि भारत को सबसे मुखर-अनूठा लोकतंत्र क्यों कहा जाता है और जनादेश की शक्ति की प्रबलता क्या और कैसी होती है।

संसद के दोनों सदनों में विधेयक पर चल रही चर्चा के दौरान एक समय यह बात उठी कि यह विधेयक भारत की संकल्पना या आइडिया ऑफ इंडिया के खांचे में बैठता है या नहीं। यह विषय दिलचस्प है। दरअसल स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से ही आइडिया आफॅ इंडिया को बौद्धिक दिखने की चाह पाले राजनेताओं ने ऐसी रुमानी काल्पनिक पहेली की तरह छाती से लगा रखी है जिसका जवाब उनके मुताबिक सिर्फ उन्ही को पता है। वैसे, क्या है भारत का विचार? किसी चीज को दुरुस्त करने, समय के अनुरुप ढलने और न्यायपूर्ण ढंग से चीजों का समायोजन करने की गुंजायश इस विचार में कितनी है?

यदि नेहरुवादी राजनेताओं से पूछेंगे तो आपको कोई ऐसा जवाब मिल सकता है जो ऊपरी तौर पर गंभीर किन्तु वास्तव में निरर्थक हो। हो सकता है कि इसमें सारी बात नेहरु जी की महानता पर आकर टिक जाए। किन्तु इतने से बात नहीं बनती। अपनी खूबियों-कमजोरियों के साथ किसी राजनेता का राष्ट्र का पर्याय हो पाना असंभव है। जो ऐसी परिभाषाएं गढ़नें की कोशिश करते हैं, वे किसी दिवंगत विभूति को बौना बनाने के साथ ही अपनी समझ की क्षुद्र सीमाएं भी बताते हैं तथा परिहास के पात्र बनते हैं।

वैसे, प्रख्यात इतिहास लेखक पैट्रिक फ्रेंच की नजर में नेहरु द्वारा लिखी 'डिस्कवरी आफॅ इंडिया' की सीढ़ी से आइडिया ऑफ इंडिया तक कैसे पहुंचेगी? नेहरु से आगे बढ़िए.... जग के ठुकराए लोगों को, लो मेरे घर का द्वार खुला अपना सब कुछ मैं लुटा चुका, फिर भी अक्षय है धनागार। **हिन्दू तन मन, हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय** ।।

यही तो है भारत की संकल्पना, आइडिया ऑफ इंडिया। आक्रांताओं की लूट-चोट के बाद भी अटल-अक्षय भारत। जग की ठुकराई मानवता का ठौर भारत! कुछ को संतुष्ट करने की बजाय सबको पुष्ट करने का मंत्र देता भारत।

तथ्यत: इतिहास यह है कि एक सांस्कृतिक राष्ट्र को, राजनैतिक दृष्टि से अंग्रेजों और पाकिस्तान के नफे के हिसाब से बांटने, नागरिकों को उनकी जड़ों से काटने पर सहमत होने और इस काम के पूरा हो जाने के बाद ही नेहरु और जिन्ना ने दोनों देशों की कमान संभाली।

नेहरु और जिन्ना से पहले यह देश कैसा था और भारत का विचार कैसा था, उस पर लंबे आख्यान हो सकते हैं, किन्तु इसकी स्पष्ट झलक स्वामी विवेकानंद द्वारा अमेरिका के शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद के सामने दिए भाषण में दिखती है, स्वामी विवेकानंद ने वहां कहा, "हम न केवल वैश्विक सहिष्णुता में विश्वास रखते हैं, बल्कि सभी मत-पंथों को सच्चा मानते हैं। मुझे गर्व है कि मैं उस राष्ट्र का हिस्सा हूं जिसने दुनिया भर के उत्पीड़ितों और शरणार्थियों को अपने यहां शरण दी है"।

यदि नेहरुवादी इतिहासकारों के अनुसार भारत 1947 में बना तो 1893 में विवेकानंद किस राष्ट्र की बात कर रहे हैं? जाहिर है, भारत कोई ऐसी चीज नहीं, जो 1947 में 15 अगस्त को ईस्ट इंडिया कंपनी से बाहर आया। यह राष्ट्र तत्कालीन

कानद ने दुनिया ष्णुता का पाठ

राजनेताओं, ब्रिटिश शासन या मुस्लिम आक्रांताओं से भी पहले दुनिया में अपनी छाप रखता था। तथापि बौद्धिक यदि भारत के इस अस्तित्व को समझ लें तो भारत की संकल्पना जैसी पहेली ही नहीं बचेगी। कुछ लोगों को लगता है कि गुंजायश बची रहेगी, जो अंग्रेज छोड़कर गए थे। यह बची-खुची चीज और कुछ नहीं अंग्रेजों की बांटो और राज करो की राजनीति' है। भारत अब अंग्रेजों की राजनीति छोड़ रहा है। अपनी जड़ों की ओर लौट रहा है। कोई तुष्टीकरण नहीं! सबका साथ, सबका विकास! मूलमंत्र यही है।

वास्तव में भारत का विचार इसकी वह सांस्कृतिक शक्ति है, जो विभाजक रेखाओं को मिटाती है, समय-समय पर उपजने वाली बुराइयों को दूर करने के लिए सुधारों को धार और स्वीकार्यता देती है। किसी अब्राहमिक सिमेटिक या 'वाद' में जो निष्ठुर कठोरता हो सकती है, उसके उलट भारत का विचार सही के स्वीकार और गलत के परिष्कार का विवेक रखता है। भारत के इस वैचारिक अधिष्ठान से हटते ही पाकिस्तान ने सबसे पहले अपनी 'हिन्दू' विरासत पर चाकू चलाया। भारत में अल्पसंख्यक फले-फूले किन्तु पाकिस्तान में घटते-खपते गए। इंसान को मुस्लमान और काफिर के खांचे में देखने के चलते पाकिस्तान अल्पसंख्यकों के लिए त्रास का पर्याय बन गया।

पाकिस्तान, बांग्लादेश या अफगानिस्तान में हिन्दू कटेंगे, घटेंगे तो धर्म के नाम पर प्रताड़ित ये मनुष्य कहां जाएंगे? नया नागरिक कानून भारत की उसी अवधारणा को मजबूत करने वाला है जो इस भूमि का शाश्वत विचार है। यह ठीक वैसा काम है जिसका जिक्र स्वामी विवेकानंद ने अपने भाषण में किया, अटल जी ने अपनी कविताओं में किया। ◆◆◆

सीएए से देश के मुस्लिम नागरिकों को कोई खतरा नहीं

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के प्रदेश संयोजक के0 डी0 हिमाचली ने बिलासपुर में एक प्रेस वार्ता में सीएए को लेकर देश में हो रहे दुष्प्रचार को दूर करने के लिए आयोजित प्रेस वार्ता में कही। उन्होंने कहा कि हिदुस्तान में प्रत्येक समुदाय के लोग रहते हैं। यहां के हर मुसलमान की पहचान हिंदुस्तान से है। अगर हिंदुस्तान खतरे में नहीं तो फिर हिंदुस्तानी मुस्लिम कैसे खतरे में हो सकते हैं। हिदुस्तान ऋषि-मुनियों की तपोस्थली है यहां शरण मिलती है, किसी को भगाया नहीं जाता। उन्होंने कहा कि आज सबसे ज्यादा शरणार्थी भारत में हैं।

यह कानून उनको नागरिकता देने के लिए बनाया गया है। इस कानून का विरोध करने वाले पहले देख तो लें कि उसमें लिखा क्या है। हिमाचली ने मुस्लिम धर्मगुरुओं व नेताओं से कहा कि वो भी जुम्मा की नमाज की इबादत का राजनीतिकरण करना बंद करें। पूरी दुनिया में मुसलमानों की छवि खराब न करें। इस्लाम टूटे हुए दिलों को जोड़ता है, तोड़ता नहीं। सीएए, एनआरसी, तीन तलाक व राम मंदिर जैसे मुद्दे हिदू-मुसलमान के नहीं हैं बल्कि राष्ट्रीय मुद्दे हैं तथा देश के प्रत्येक नागरिक से जुड़े हैं। इन्हें हिदू मुसलमान से जोड़ना सरासर गलत है। राजनीतिक महत्वकांक्षाओं के लिए दुष्प्रचार गलत के0डी0 हिमाचली ने देश में सीएए के नाम पर फैलाये जा रहे दुष्प्रचार पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि कुछ लोग राजनीतिक महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए भी इस कानून के बारे में भ्रामक बातें फैला रहे हैं जोकि सरासर गलत है। उन्होंने समाज के प्रबुद्ध जनों से आग्रह किया कि समाज में फैलाये जा रहे झूठ के विरूद्ध लोगों को सही जानकारी प्रस्तुत करे। जिससे समाज में किसी प्रकार के विद्वेश की भावना को बल न मिले। ◆◆◆

NRC भारत का आंतरिक मामला है

– शेख हसीना

मुस्लिम तुष्टिकरण और निहित राजनीतिक स्वार्थों के कारण देश के भीतर भले कुछ ताकतें घुसपैठियों की ढाल बनने की कोशिश कर रही हों, लेकिन बांग्लादेश ने फिर दोहराया है कि अवैध रूप से भारत में रह रहे अपने हरेक नागरिक को वह वापस बुलाएगा। उसने कहा है कि अगर भारत में किसी भी बांग्लादेशी नागरिक के अवैध रूप से रहने का सबूत दिया जाता है तो उसे वापस बुलाया जाएगा। यह बात बांग्लादेशी प्रधानमंत्री शेख हसीना के अंतरराष्ट्रीय मामलों के सलाहकार गौहर रिजवी ने कही है। इससे पहले बांग्लादेश के विदेश मंत्री ए0 के0 अब्दुल मोमेन ने यह बात कही थी। उन्होंने कहा था कि हमने भारत में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों की सूची मुहैया कराने का अनुरोध किया है। भारत द्वारा सूची मुहैया कराने पर उन नागरिकों को लौटने की मंजूरी दी जाएगी।

इसी कड़ी में अब रिजवी ने कहा है, भारत में अवैध रूप से रह रहे बांग्लादेशी नागरिकों को भारत में रहने का सबूत देना होगा। यह मानक प्रक्रिया है। मुझे नहीं लगता कि इसे कोई मुद्दा बनाने की जरूरत है। उन्होंने राष्ट्रीय नागरिक पंजी. (NRC) और नागरिकता संशोधन कानून (CAA) को भारत का आंतरिक मामला बताते हुए यह बात कही।

इनसे दोनों देशों के संबंधों पर असर पड़ने की बात को भी रिजवी ने खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि भारत के साथ रिश्ते इस वक्त सुनहरे दौर में हैं। बकौल रिजवी, "हमारी दोस्ती पिछले 50 वर्षों से है। भारत हमेशा हमारे साथ है और भविष्य में भी रहेगा। दुनिया में बहुत कम ऐसे उदाहरण हैं जहां एक देश के लोगों ने दूसरे देश की आजादी के लिए खून बहाया हो।" उन्होंने कहा कि, "भारत हमेशा से सहिष्णु और धर्मनिरपेक्षता में यकीन करने वाला मुल्क रहा है।"

रिजवी और मोमेन का बयान ऐसे वक्त पर आया है जब दावा किया जा रहा था कि एनआरसी और सीएए को लेकर बांग्लादेश खुश नहीं है। इसका भारत और बांग्लादेश के संबंधों पर असर पड़ने की बात भी कही जा रही थी। मोमेन का भारत दौरा रद्द होने का करण भी यही बताया जा रहा था। लेकिन, मोमेन ने भारत के साथ मजबूत संबंधों का हवाला देकर तमाम अटकलों को खारिज कर दिया था।

बता दें कि 30 अगस्त को NRC की अंतिम लिस्ट प्रकाशित हुई थी। इसके लिए 3.3 करोड़ आवेदकों ने आवेदन किया था। जिसमें से 19 लाख से अधिक लोगों को बाहर रखा गया। बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने सितंबर में न्यूयॉर्क में द्विपक्षीय बैठक के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ NRC का मुद्दा उठाया था। हालाँकि भारत ने बता दिया कि यह मुद्दा देश का आंतरिक मामला है।

इस बीच, प्रधानमंत्री शेख हसीना के हवाले से बांग्लादेशी मीडिया में कहा गया है कि पाकिस्तान केवल भारत ही नहीं अन्य पड़ोसी देशों के खिलाफ भी साजिश रचता रहा है। हसीना ने कहा है कि कड़े संघर्ष के बाद मिली आजादी को पाकिस्तान से मोहब्बत रखने वाले इसे खत्म करने और विफल करने की कोशिश में हैं। लेकिन, वह इन साजिशों को सफल नहीं होने देंगी। ◆◆◆

साजिश बहुत गहरी है... सावधान रहिए

—सतीश चन्द्र मिश्रा

CAA NPR के बाद अब जेएनयू और जामिया में बवाल के बहाने देशव्यापी हिंसा फैलाने का उद्देश्य और लक्ष्य कुछ और है, जो बहुत खतरनाक है। इतने बवाल के बावजूद इसे कोई महत्व ना देते हुए प्रधानमंत्री अपने हर सम्बोधन में भारत को 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनाने के अपने लक्ष्य का उल्लेख आत्म-विश्वास के साथ कर रहे हैं। इसका ठोस कारण है।

भारतीय उद्योग परिसंघ सी0 आई0 आई0 ने बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप के साथ व से सम्बन्धित अपनी एक रिपोर्ट तैयार की है। 56 पेज की इस रिपोर्ट के अनुसार 2020 में भारत के राजस्व में लगभग 20 हजार करोड़ डॉलर वृद्धि होगी तथा लगभग 4 करोड़ रोजगार (नौकरियों) की वृद्धि होने वाली है। यह रिपोर्ट इनहाउस रिपोर्ट है। सरकार की प्रचार पुस्तिका नहीं है।

इस रिपोर्ट में वृद्धि की संभावनाओं के संकेत पिछले 2 महीनों (दिसम्बर और नवंबर) के दौरान दिखने लगे हैं। इस अवधि में जीएसटी का संग्रह लगातार एक लाख करोड़ के पार हुआ है। दिसम्बर, नवम्बर 2018 की तुलना में यह 10 से 15 प्रतिशत अधिक है। देश की अर्थव्यवस्था तबाह बरबाद हो जाने का मीडियाई मातम पिछले कुछ महीनों से और अभी भी कर रहे राजनीतिक मीडियाई धुर्तों के मुंह पर जोरदार थप्पड़ की तरह है उपरोक्त सच्चाई। सी0 आई0 आई0 की रिपोर्ट का अत्यन्त नकारात्मक आंकलन कर यदि उसके निष्कर्षों को 50 प्रतिशत ही सच माना जाए तो भी इस वर्ष देश मे 2 करोड़ नई नौकरियों का सृजन निश्चित रुप से होने जा रहा है।

इस लक्ष्य की प्राप्ति में रोक केवल देशव्यापी हिंसा ही लगा सकती है। यही कारण है कि लगातार किसी ना किसी बहाने देश को भयंकर हिंसा की आग में झोंकने की जबरदस्त कोशिशें प्रारम्भ हो गई हैं। ये कोशिशें कर रहे राजनीतिक दल और राजनेताओं के चेहरे तो देश भलीभांति देख सुन और पहचान रहा है। लेकिन हिंसा की आग फैलाने में इन राजनीतिक दलों और राजनेताओं की मदद लुटियनिया मीडिया खुलकर कर रहा है।

900 से अधिक विश्वविद्यालय और लगभग 45 हजार डिग्री कॉलेजों वाले देश की 4-5 यूनिवर्सिटी (जिनमें से 2 तो इस्लामी कट्टपंथियों के अड्डे के रूप में कुख्यात हैं) में 3-4 सौ उदण्ड विद्यार्थियों के समूहों की गुंडई को देश भर के युवाओं का देशव्यापी गुस्सा कह कर चौबीसों घण्टे नॉन स्टॉप प्रचारित कर रहे चैनल आजतक और एनडीटीवी सरीखे कुछ न्यूज चैनल और 4-5 वेबसाइट इस हिंसा को भड़काने और देश भर में फैलाने का भरपूर प्रयत्न लगातार कर रहे हैं। इनसे सावधान रहिए और अधिकतम लोगों को सावधान करते रहिए। क्योंकि हमारी, आपकी, देश की प्रगति पूरी तरह ठप्प कर देने की यह साजिश बहुत गहरी है। ◆◆◆

छुपा एजेंडा उजागर हुआ

देश को ये जानना बहुत जरूरी है कि जो मुसलमान ट्रिपल तलाक पर शांत रहा,धारा 370 पर शांत रहा, राम मंदिर पर शांत रहा वो नागरिक संशोधन बिल पर एकाएक आक्रमक क्यो हो गया ? असल मे इसकी वजह जानने के लिये हमें कुछ सालों पीछे जाना पड़ेगा। कुछ साल पहले फ्रांस के राष्ट्रपति ने भारत को चेतावनी जारी की गई थी कि आईएस ने भारत में जिहाद फैलाने की साजिश रची है। इसके कुछ समय बाद रशियन राष्ट्रपति पुतिन ने भी भारत को इस्लामिक जिहाद से सावधान रहने को कहा। इसी प्रकार अमेरिकन इंटेलिजेंस एजंसियों ने भी भारत को सावधान किया था कि इस्लामिक जिहादी भारत में सक्रिय होकर कोई बहुत बड़ी कारवाई कर सकते हैं। तमाम विश्व की खुफिया एजेंसियों की एक ही रिर्पोट थी कि भारत इस्लामिक जिहादियों के निशाने पर है। उस समय के यूनाइटेड नेशन के भूतपूर्व महासचिव बान की मून ने भी भारत को सावधान किया था, लेकिन उस समय की कांग्रेस सरकार ने मुस्लिम तुस्टीकरण की वजह से कोई कार्यवाही नहीं की। लेकिन जैसे ही मोदी सरकार सत्ता में आयी तो इन लोगों ने इस्लामिक कट्टरपंथियों की साजिश पकड़ ली।

कुछ एन0जी0ओ0 और मानवाधिकार संगठनों की आड़ में इस्लामिक जिहादियों को संरक्षण दिया जा रहा था।भारत मे हिन्दू आबादी को खत्म करने के लिए घुसपैठ और धर्मान्तरण का सहारा लिया जा रहा था। जिसमें कांग्रेस, वामपंथियों के कद्दावर नेता तक शामिल थे। मोदी सरकार ने सबसे पहले इन एन0 जी0 ओ0 और मानवाधिकार संगठनों को प्रतिबंधित किया और नोटबन्दी के माध्यम से इनको दिवालिया कर दिया। अब जैसे ही CAB पारित हुआ, वैसे ही इनके जहरीले मनसूबे ध्वस्त हो गए, ये लोग तिलमिला गए। अपनी पोल खुलने पर ये लोग आज बुरी तरह से तिलमिला गए है और हिंसा पर उतारू हो कर CAB का विरोध कर रहे हैं। इनके मनसूबे को देशहित और अपनी आनेवाली पीढ़ी के लिए जानना और समझना बहुत जरूरी है। ◆◆◆

प्रदेश में खोले जाएंगे 1000 गो सदन

प्रदेश में जनजातीय जिला लाहौल स्पीति को छोड़ कर अन्य सभी 11 जिलों में गो सदन खुलेंगे। प्रस्तावित सदन बनने के बाद लावारिस गो धन को खुला वातावरण और सुरक्षित आश्रय मिल पाएगा। जिला कांगड़ा में सबसे अधिक चार गो सदन बनेंगे। सरकार ने 250 से बढ़ाकर एक हजार गो सदन बनाने का लक्ष्य तय किया है। प्रत्येक गो सदन में 500 से 600 पशुओं को रखने की व्यवस्था की जाएगी।

इस आशय की जानकारी राज्य के ग्रामीण विकास एवं पशुपालन मंत्री वीरेंद्र कंवर ने दी। उन्होंने बताया कि सरकार के आंकड़ों के अनुसार जिला लाहौल स्पीति में अभी तक कोई भी लावारिस पशु नहीं है। प्रदेश में कुल 27,352 पशु लावारिस पाए गए हैं जबकि 13,337 पशुओं को गौ सदनों में रखा गया है। वीरेंद्र कंवर ने कहा कि पशुओं के चरने के लिए भूमि उपलब्ध होने पर ही सुविधा उपलब्ध की जाएगी। जिला सिरमौर के कोटला बड़ोग, जिला सोलन के हंडा कुंडी, हमीरपुर के खेरी, जिला ऊना के थाना कलां खास, जिला कांगड़ा के इंदौरा डमटाल, पालमपुर के कुंदन, जयसिंहपुर के कंगैहन और ज्वालामुखी के लुथान, जिला बिलासपुर के बरोटा डबवाल और धार टटोह में गो सदन बनेंगे। उन्होंने कहा कि जिला सिरमौर, सोलन, ऊना, हमीरपुर और चंबा में बड़े गो सदनों का निर्माण कार्य प्रगति पर है। सोलन के लिए 109 बीघा जमीन चयनित की है। ऊना, सुजानपुर और चंबा में क्रमशः 114.7 बीघा, 390 कनाल, 153 कनाल और 12. 5 बीघा जमीन है। सिरमौर में 1.52 करोड़, सोलन में 2.97 करोड़, ऊना मे 1.69 करोड़ हमीरपुर 2.56 करोड़ और चंबा के गो सदन पर 1.66 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान है। ◆◆◆

मकर संक्रांति पर तत्तापानी में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन

हिमाचल प्रदेश की सतलुज नदी पर स्थित ऋषि जमदग्नि की तपोस्थली तत्तापानी में मकरसंक्रांति के पावन अवसर पर हेडगेवार स्मारक समिति और श्यामला आरोग्यम सेवा चल चिकित्सालय के सौजन्य से निःशुल्क चिकित्सा जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर का शुभारंभ मंडी सांसद श्री रामस्वरूप शर्मा ने विधायक श्री हीरा लाल की मौजूदगी में किया। उन्होंने हेडगेवार स्मारक समिति और श्यामला आरोग्यम सेवा चल चिकित्सालय के प्रयासों को सराहा। उन्होंने कहा कि तत्तापानी की तपोस्थली में हर वर्ष मकर संक्रांति पर्व के अवसर पर लोग दूर-दूर से गरम पानी के स्त्रेतों में स्नान करने आते हैं। ऐसे में उनके स्वास्थ्य को बेहतर करने के लिए समिति जो प्रयास कर रही है वह प्रशंसनीय है।

हेडगेवार स्मारक समिति के सचिव मनोज कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि चिकित्सा शिविर में कुल 365 लोगों ने स्वास्थ्य जांच करवाई और 50 लोगों के विभिन्न प्रकार के टेस्ट भी किए गए। इसके लिए प्रदेश स्तरीय अस्पताल आईजीएमसी और जिला अस्पताल डीडीयू से 18 सदयीय चिकित्सकों का दल शिविर में उपस्थित रहा। जिसमें जरनल मेडिसिन, सर्जरी, ऑर्थो, ईएनटी, आंखों के रोग, हृदय रोग, चरम रोग, स्त्री रोग विशेषज्ञ शामिल रहे। इस दौरान जहां मरीजों को निःशुल्क जांच व दवा उपलब्ध करवाई गई साथ ही लैब संबंधित निःशुल्क टेस्ट भी किए गए। डीडीयू शिमला के वरिष्ठ चिकित्सा अधीक्षक लोकेंद्र शर्मा भी चिकित्सक दल में शामिल रहे।◆◆◆

पाक विस्थापितों ने धर्म और इज्जत बचाने को अपना घर बार छोड़ा-गुलजारी लाल

विश्व संवाद समिति - पंजाब पाकिस्तान से विस्थापित होकर आए सैकड़ों हिंदू-सिख परिवारों ने आज जिला उपायुक्त को ज्ञापन सौंपा जहां नागरिकता संशोधन विधेयक के लिए केंद्र सरकार का आभार जताया वहीं पंजाब सरकार से मांग की कि राज्य में भी इस विधेयक को लागू किया जाए। अपनी दास्तां सुनाते हुए पीड़ित परिवारों के जहां आंखों में आंसू भर आए वहीं उनके दिलों में उम्मीद की रोशनी भी जलती दिखाई दी कि नए कानून से उन्हें जल्द राहत मिलने वाली है। पेशावर से विस्थापित होकर आए गुलजारी लाल ने बताया कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों के लिए वातावरण इतना असुरक्षित है कि वे अपने बच्चों को निर्भय हो कर स्कूलों में भी नहीं भेज पाते। उन्होंने बताया कि गुंडे किस्म के लोग बच्चियों को उठा कर ले जाते हैं और बाद में बता दिया जाता है कि वह मुसलमान हो गई। इसके बाद न तो पाकिस्तान का कोई कानून व न ही पुलिस व्यवस्था इन पीड़ित बच्चियों को इंसाफ नहीं दिलवा पातीं। इन बच्चियों के सामने गुंडों के साथ जाने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचता। 16 साल की युवती हिना ने बताया कि स्कूल-कालेजों में जाते समय उन्हें भय के माहौल में रहना पड़ता है और उन्हें कलमा पढ़ने को मजबूर किया जाता है। इसी तरह कस्तूरी लाल व ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थी सागर नागपाल ने बताया कि पाकिस्तान में हिंदुओं को अपने प्रियजनों के शवों का अंतिम संस्कार करवाने के लिए सैंकड़ों किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। दुनिया के प्रताड़ित हिंदू अगर भारत नहीं आएंगे तो आखिर कहां जाएंगे। कस्तूरी लाल ने बताया कि पाकिस्तान ने हाल ही में इसाई युवतियों को शादी के नाम पर चीन को बेच दिया है। 36 साल की महिला रेशमा देवी बताती हैं कि मोदी सरकार ने जैसे ही नागरिकता संशोधन विधेयक पास किया उन्होंने राहत की सांस ली और अब उनमें उम्मीद जगी है कि उनके बच्चे भी अच्छा जीवन व्यतीत कर सकेंगे। विस्थापितों ने पंजाब सरकार से मांग की है कि वह इस कानून के मार्ग में रोड़ा न अटकाए और पंजाब में भी इसे लागू करे। इस मौके पर विस्थापित हिंदू-सिखों ने लड्डू बांट कर एक-दूसरे का मुंह मीठा करवाया और प्रधानमंत्री व केंद्रीय गृहमंत्री का आभार जताया। ◆◆◆

With Best Compliments from:

A School with a difference

SARASWATI VIDYA MANDIR

Affiliated to H.P. School Education Board Dharamshala. (Affiliation No.: 26021)

प्रवेश प्रारम्भ सत्र 2020-21

नर्सरी कक्षा से नवम कक्षा तक प्रवेश: 1 फरवरी से मात्र कुछ सीटें

नियमित कक्षाएं 19 फरवरी से प्रारम्भ

10+1 तथा 10+2 कक्षा में 02 अप्रैल से मात्र कुछ सीटें

10+1 तथा 10+2 कक्षा 16 अप्रैल से प्रारम्भ

Senior Secondary School Samoli (Rohru) Nursery to (10+2 Science), (Recognised)

Ph.: 01781-241623 Mob.: 98573-71887, 94592-71887

www.rohru.svmschools.org YOUTUBE चैनल को Subscribe करें Samoli126@gmail.com

फूलों से बनेंगे खुशबूदार पटाखे
ईको फ्रेंडली पटाखे बनाने के लिए सिरमौर प्रशासन की पहल

-संजय भारद्वाज

पर्यावरण और ध्वनि प्रदूषण फैलाने वाले पटाखे अब धुआं छोड़ने के बजाय खुशबू बिखेरेंगे। इनको मंदिरों में चढ़ने वाले फूलों से बनाया जाएगा। पर्यावरण संरक्षण के मद्देनजर ईको फ्रेंडली पटाखों को बनाने के लिए जिला सिरमौर प्रशासन ने पहल की है। प्रशासन हिमालय जैव संपदा प्रौद्योगिकी संस्थान (सीएसआईआर) पालमपुर के साथ नाहन के एक पटाखा निर्माता का करार कराने जा रहा है। हर दिवाली पर आतिशबाजी से प्रदूषण खतरे के निशान से उपर चला जाता है। सिरमौर प्रशासन ने इस वर्ष दिवाली में ईको फ्रेंडली पटाखे बनाने के लिए बेहतर मंच उपलब्ध करवाने के प्रयास किए हैं। इसके लिए पटाखा निर्माता शकील शेख को तैयार किया है। उपायुक्त के प्रयासों से शेख और सीएसआईआर के बीच अनुबंध होगा, जिसके बाद इन पटाखों को बनाने की प्रक्रिया आरंभ होगी। उपायुक्त डा. आर के परूथी ने बताया कि इन पटाखों में कैमिकल नाममात्र होगा। शकील शेख ने बताया कि यह पटाखे दूसरे पटाखों की अपेक्षा 30 से 40 फीसदी कम प्रदूषण फैलाएंगे। हानिकारक धुंआ भी नहीं छोड़ेंगे। खुशबू के लिए भी ईको फ्रेंडली केमिकल इस्तेमाल होगा।

इस दिवाली गोबर के दीयों से रोशन होंगे घर:

सिरमौर को प्लास्टिक मुक्त बनाने के साथ ही गो संरक्षण और मंदिरों में चढ़ने वाले फूलों के उपयोग की दिशा में भी प्रशासन कदम उठा रहा है। प्रशासन ने विजन डाक्यूमेंट तैयार कर गोबर के दीये और गमले बनाने के साथ-साथ मंदिरों में चढ़ने वाले फूलों से अगरबत्ती और धूप बनाने का निर्णय लिया है। जिले में औषधीय पौधों और फूलों की खेती और उसके विकास के लिए सीएसआईआर के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जाएंगे। दुर्लभ और विलुप्त होने के कगार पर पहुंचे पौधे रोपित होंगे। इसके अलावा हर्बल अगरबती के लिए उद्यम लगाएंगे। उपायुक्त ने बताया कि गोबर के दीये माता बालासुंदरी गोसदन में तैयार होंगे। इसके लिए पांच लाख रूपए स्वीकृत हुए हैं। ◆◆◆

पर्यटन स्थल फागू के नजदीक बनेगी आधुनिक सब्जी मंडी

कसुम्पटी और ठियोग की दर्जनों पंचायतों के लोगों के लिए आधुनिक सब्जी मंडी के निर्माण का रास्ता साफ हो गया है। इससे किसानों में खुशी की लहर है। एपीएससी द्वारा एफएआर के तहत वन विभाग को 30 लाख की राशि जमा करवाने से थरमटी में करीब 20 बीघा वन भूमि अब एपीएमसी के नाम हो गई। इस वन एवं पर्यावरण विभाग से मंजूरी भी मिल गई है। सरकार ने सब्जी मण्डी के प्रथम चरण के निर्माण के लिए 7 करोड़ की राशि भी मंजूर कर दी है। इसी साल इसका कार्य शुरू कर दिया जाएगा। मंडी के निर्माण से ठियोग और कसुम्पटी की दर्जनों पंचायतों के हजारों किसानों-बागवानों को लाभ होगा। किसान अब घर द्वार ही अपने कृषि उत्पाद बेच सकेंगे। यही नहीं ढली और ठियोग की मंडियों तक पहुंचने के लिए लगने वाले घंटों जाम की समस्या से भी राहत मिलेगी। लोगों का कहना है कि जिस स्थान पर वर्तमान सरकार ने मंडी का निर्माण शुरू किया है वहां पर्याप्त भूमि होने के साथ जाम की भी कोई समस्या नहीं होगी।

गिरिपार क्षेत्र को भी मिलेगा लाभ:

फागू के नजदीक राष्ट्रीय उच्च मार्ग पर थरमटी में बनने वाली मंडी से ठियोग, कसुम्पटी की कई दर्जन पंचायतों के अलावा गिरिपार क्षेत्र के हजारों सब्जी उत्पादकों को लाभ मिलेगा। यह लोग अब तक केवल ढली मंडी पर निर्भर हैं, दूरी कम होने से भी किसानों को अपने उत्पादों का कम भाड़ा देना पड़ेगा और समय की भी बजत होंगी। ◆◆◆

श्री कोटेश्वर महादेव की अद्भुत महिमा

-हितेन्द्र शर्मा

कुमारसैन का वास्तविक नाम कुम्हारसेन है। कुम्हार शब्द का जन्म संस्कृत भाषा के शब्द "कुंभकार" से हुआ है जिसका अर्थ है मिट्टी के बर्तन बनाने वाला, कुम्हारों के अस्तित्व के कारण इस स्थान का नाम कुम्हारसेन रखा गया होगा जोकि आज कुमारसैन के नाम से विख्यात है। प्राचीन कुम्हारसेन रियासत वर्तमान में हिमाचल प्रदेश के जिला शिमला का एक उपमंडल है। पुनर्सीमांकन से पहले यह कुमारसैन विधानसभा क्षेत्र के रूप में भी प्रसिद्ध रहा। कुम्हारसेन ठकुराई और कुम्हारसेन रियासत के रुप में कुमारसैन का प्राचीन एंव रोचक इतिहास वाचिक और लिखित तौर पर संदर्भ के रूप में मौजूद है।

देवस्थानों के कारण हिमाचल प्रदेश को देवताओं की भूमि अर्थात देवभूमि कहा जाता है। देवभूमि के सभी क्षेत्रों का संचालन स्थानीय देवी-देवताओं द्वारा ही किया जाता है। कोटेश्वर महादेव एक अदृश्य शक्ति के रूप में अनंत काल से अधिष्ठाता के रूप में कुमारसैन में प्रतिष्ठित हैं। महादेव से अभिप्राय भगवान शिव अर्थात सबसे बड़े देवता से है। सनातन धर्म के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीन प्रमुख देवता हैं, और भगवान शिव को ही महेश कहा गया है। अविनाशी भगवान शिव अपने सौम्य और रौद्र रूप के लिए इस जगत में विख्यात हैं। लय एवं प्रलय दोनों ही महादेव के अधीन हैं।

प्राचीन काल में सीमाओं के तहत ठुकराई, रियासत और राजवंश का अस्तित्व इस क्षेत्र में 11वीं शताब्दी से रियासतों के विलय तक रहा, जोकि वर्तमान में लिखित पन्नों तक सीमित है। जबकि अनादि कोटेश्वर महादेव ने अपने अस्तित्व को पुनः स्थापित किया है। यह महादेव की अद्भुत महिमा है, जिसके हम साक्षी हैं। प्राचीन दंतकथा के अनुसार मैहणी में कोटेश्वर महादेव का प्रथम मंदिर स्थापित हुआ था। जीर्णोद्धार एंव पुनर्निर्माण के पश्चात कोटेश्वर महादेव का यह मंदिर अलौकिक सुंदरता के साथ मैहणी में अपने ऐतिहासिक स्थल पर सुशोभित है। कुम्हारों के अस्तित्व वाले ऐतिहासिक स्थल पर वर्तमान में शरकोट मंदिर, भव्य एंव आकर्षक कोटेश्वर महादेव परिसर का पुनर्निर्माण हुआ है। प्राचीन लक्ष्मी नारायण मंदिर और मंढोली स्थित कोटेश्वर महादेव मंदिर के जीर्णोद्धार एंव पुनर्निर्माण का कार्य महादेव द्वारा भद्रों के माध्यम से करवाया जा रहा है। कोटेश्वर महादेव की केदारनाथ यात्रा के दौरान सहयात्री रहे सौभाग्यशाली भद्रजन उन दैवीय पलों के भी साक्षी रहे, जब महादेव ने केदारी अर्थात साक्षात भगवान केदारनाथ होने का दृष्टांत दिया। कहते हैं कि देवताओं का एक पल हमारे एक युग के बराबर होता है, अदृश्य शक्ति के रूप में इष्टदेव श्री कोटेश्वर महादेव अनंत काल से निरन्तर कुमारसैन (कुम्हारसेन) क्षेत्र का कुशल संचालन कर रहे हैं। कोटेश्वर महादेव की कृपा और आशीर्वाद से ही लगभग 1000 वर्ष पूर्व कीर्ति सिंह जिनका उल्लेख कीरत सिंह नाम से भी है, कुम्हारसेन रियासत के प्रथम शासक अर्थात राणा हुए, गया से आए राणा कीर्ति सिंह को कुम्हारसेन रियासत का संस्थापक भी माना जाता है। इस पहाड़ी रियासत के इतिहास पर बहारें कुम्हारसेन नामक पुस्तक लिखी गई है। शायद फारसी और उर्दू भाषा के अत्यधिक प्रचलन या इन भाषाओं के विद्वानों के कारण बहारें कुम्हारसेन पुस्तक को इन्हीं भाषाओं में लिखा गया होगा। कुमारसैन के गजेटियर तथा इतिहास पर लिखित पुस्तकों के पठन तथा जनश्रुति, दंतकथा एंव लोकगाथाओं के श्रवण से सिद्ध होता है कि जिज्ञासा और ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती।

कुम्हारसैन रियासत के 58वें राणा के रुप में राणा सुमेश्वर सिंह राजगद्दी पर 1945 से 1948 तक रहे, इसके पश्चात पहाड़ी रियासतों का विलय हो गया। वर्ष 1996 में राणा सुमेश्वर सिंह के देहावसान के पश्चात 59वें उत्तराधिकारी के रूप में राणा सुरेंद्र सिंह कुमारसैन में मौजूद हैं। देव संस्कृति एंव परम्परा के अनुसार राणा की उपस्थिति अनिवार्य है। श्री कोटेश्वर महादेव के गूर (गणैता) के माध्यम से देवता के वचनों अर्थात देववाणी द्वारा क्षेत्र का संचालन होता चला आ रहा है। श्री कोटेश्वर महादेव परिसर, शरकोट मंदिर, मंढोली में स्थित कोटेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर एंव देवरा वर्तमान में कुमारसैन क्षेत्र की पहचान है। हजारों वर्षों के इतिहास को संजोए यह धरोहरें वर्तमान में ईश्वरीय शक्ति के अनंत होने के साक्षात प्रमाण हैं। भारतीय आध्यात्मिक दर्शनों के अनुसार ज्ञान वह है जो मनुष्य को उन्नत करता है तथा उसके लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करता है। ◆◆◆

वर्तमान में वोटरशिप के मायने

-प्रदीप सिंह पॉल

विश्वात्मा एक व्यक्ति का नाम ही नहीं वरन् यह एक व्यक्ति के जीवन संघर्ष से उत्पन्न एक मानवीय, वैज्ञानिक, सार्वभौमिक तथा युगानुकूल आदर्श जीवन शैली है। विश्वात्मा ने बाल एवं किशोर भरत के नाम से अपने परिवार-जाति के लिए जन्म से लेकर 25 वर्ष तक जीवन जीया। विश्वात्मा ने देश की सेवा करते हुए युवा भरत गांधी के नाम से 26 से 50 वर्ष तक की सफल जीवन यात्रा की है। युवा भरत गांधी के जीवन संघर्ष से 25 वर्ष पूर्व वोटरशिप विचार का जन्म हुआ था। उसी समय उन्होंने संकल्प लिया था कि वह न तो कोई व्यक्तिगत सम्पत्ति बनायेंगे और न ही किसी बैंक में अपना व्यक्तिगत खाता खोलेंगे। साथ ही वह वोटरशिप मिलने पर ही विवाह करके घर बसायेंगे। इस संकल्प को वह पूरी निष्ठा के साथ आज तक निभा रहे हैं।

इसी वर्ष उन्होंने 51 वें वर्ष में प्रवेश किया है। पहले से घोषित अपने संकल्प के अनुरूप वह नये नाम विश्वात्मा के नाम से अखिल विश्व की सेवा के रूप में हमारे समक्ष हैं। पहले से घोषित विश्वात्मा के रूप में आपकी जीवन यात्र 51 से 75 वर्ष तक होगी। आगे 76 वर्ष की आयु से वह एक नये नाम के साथ अन्तिम सांस तक प्राणी मात्र के लिए जीने के लिए संकल्पित हैं। हम भी इस अत्यन्त मानवीय, वैज्ञानिक तथा सार्वभौमिक मूल्यों से भरी जीवन यात्रा में विश्वात्मा के सहयात्री ही न बनें वरन् उनके जीवन से सीख लेकर यथाशक्ति अपनी रूचि तथा प्रतिभा के अनुसार समाज के विकास में योगदान देने के नये वर्ष 2020 में उजले-उजले संकल्प करें। वर्तमान में वोटरशिप अधिकार कानून बनाने का संकल्प पूरा करने में विश्व परिवर्तन मिशन तथा वी.पी.आई. रात-दिन पूरे मनोयोग से जुटी है। हमारा संकल्प प्रत्येक वोटर को आर्थिक आजादी के तहत वोटरशिप दिलाना है। वर्तमान में वोटरशिप के मायने हैं - प्रत्येक वोटर के बैंक खाते में सीधे प्रतिमाह छः हजार रूपये डालना। इसके साथ ही सरकारी कर्मचारी की तरह महंगाई भत्ता अतिरिक्त सरकारी खजाने से प्रत्येक वोटर को देने का हमारा संकल्प है। प्रायः एक परिवार में चार-पांच वोटर्स होते हैं। इस हिसाब से प्रत्येक परिवार में वोटरशिप के तहत इतनी धनराशि आ जायेगी कि उसे पैसों की तंगी के लिए आर्थिक गुलामी का जीवन नहीं जीना पड़ेगा। लोग तर्क देते हैं कि वोटरशिप मिलने से लोग निकम्मे हो जायेंगे। मनुष्य का स्वभाव है कि वह अपनी सामाजिक हैसियत बढ़ाने के लिए दिन-रात मेहनत करता है। वोटरशिप मिलने से चार-पांच वोटरों के एक परिवार का एक सदस्य समाज सेवा के लिए स्वेच्छा से अपना समय तथा प्रतिभा का दान कर सकेगा। इस प्रकार समाज का मार्गदर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में समाज सेवी मिल जायेंगे। समाज में सामाजिक कुरीतियां, महिला हिंसा तथा लूट-पाट की घटनायें कम हो जायेंगी।

युवाओं को उनकी रूचि के अनुसार रोजगार तथा नौकरी न मिलने के कारण वे दिशाहीन तथा कुंठित हो रहे हैं। वे तनाव के कारण डिप्रेशन का शिकार हो रहे हैं। सबसे युवा देश भारत के करोड़ों युवाओं की ऊर्जा को सही दिशा में लगाने के लिए वोटरशिप से बेहतर कोई विचार दुनिया में अब तक नहीं खोजा गया है। शायद हम में से अनेकों ने अपने जीवन में स्वयं बेरोजगारी की पीड़ा को झेला है। दुनिया की कोई भी सरकार आज के अति मशीनीकरण तथा वैश्विक खुले बाजार में अपने सभी युवाओं को रोजगार तथा नौकरियां नहीं दे सकती। वोटरशिप हमारी मांग नहीं वरन् हमारी जिद्द है। हम देश के प्रत्येक वोटर को वोटरशिप देकर ही मानेंगे। प्रत्येक वोटर की समस्याओं के त्वरित निस्तारण हेतु विश्व परिवर्तन मिशन कटिबद्ध है।

प्रत्येक वोटर के परिवार में पैसा आने से बाजार में ग्राहकों की संख्या अचानक बढ़ जायेगी जिससे खुदरा तथा थोक बाजारों में फिर से रौनक लौट आयेगी। वोटर की क्रय शक्ति बढ़ने से आम आदमी की मांग के अनुसार नये-नये उत्पादों का निर्माण होगा। देश की अर्थव्यवस्था मजबूत होने से आर्थिक मंदी का असर नहीं होगा। वोटरशिप से देश का धन एक-दो प्रतिशत अमीरों की तिजोरी में संग्रहित न होकर देश के अन्तिम व्यक्ति तक प्रवाहित होगा।

वोटरशिप लम्बे समय से आर्थिक रूप से पीड़ितों के दर्द को सदैव के लिए दूर करने की अचूक दवा है। अब वोटरशिप को आम जनता की आवाज बनाना चाहिए। इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर सीमित संसाधुनों के बलबुते निरन्तर कार्य किया जा रहा है। वोटरशिप का लक्ष्य ही हमारा अब एकमात्र जीने का मकसद बन जाये। 21वीं युवा सदी में वोटरशिप के युग का शुभारम्भ होगा। जय जगत, वसुधैव कुटुम्बकम् तथा 21वीं सदी - उज्जवल भविष्य का सार्वभौमिक विचार देने वाले महापुरूषों का सपना साकार होगा।◆◆◆

फेसबुक पर भगवान राम पर आपत्तिजनक टिप्पणी पर बवाल

शिमला (वि.सं.कें.)। हिमाचल में शिमला के ठियोग में फेसबुक पर भगवान राम पर अभद्र टिप्पणी करने से लोगों में भारी रोष व्याप्त है। मामला यह है कि मतियाना के एक व्यक्ति ने डेढ़ साल पहले फेसबुक पर एक पोस्ट डाली थी जिसमें भगवान राम का अपमान किया गया था। उस समय इसका स्थानीय स्तर पर विरोध भी किया गया था लेकिन फिर भी इसे फेसबुक से उक्त व्यक्ति ने नहीं हटाया था। इसी पोस्ट को अभी कुछ दिन पहले किसी व्यक्ति द्वारा शेयर किया गया जिसके बाद यह सोशल मीडिया में फिर से चलने लगी। इस पोस्ट को जब स्थानीय महिला सरिता वर्मा ने देखा तो उनको बहुत दुख हुआ और उन्होंने स्थानीय ठियोग थाने में इसको लेकर प्राथमिकी दर्ज की है। धर्म जागरण मंच की ठियोग इकाई ने भी इस घटना का विरोध किया है।

उनका कहना है कि यहां पर काफी समय से ऐसे कई लोग सक्रिय हैं जोकि हिन्दू देवी देवताओं पर सोशल मीडिया में आपत्तिजनक पोस्टें डाल रहे हैं। धर्म जागरण मंच की बात मानें तो इस प्रकार के मामलों पर पहले भी ठियोग थाना में एफआईआर दर्ज की जा चुकी है। मंच का कहना है कि इससे पूर्व देवी दुर्गा मां पर भी कई प्रकार की आपत्तिजनक टिप्पणियां कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा की गयी हैं जिसको लेकर अब तक कोई ठोस कार्यवाही नहीं हुई है जिससे ऐसे तत्वों का मनोबल बढ़ा हुआ है। उन्होंने प्रशासन से मांग की है कि ऐसे लोगों की जल्द से जल्द पहचान करके उनके विरूद्ध कड़ी कारवाई की जाये।

जातिगत विषयों पर भी किया जा रहा है लोगों को गुमराह: मंच के समन्वयक सुन्दर का कहना है कि इस प्रकार के कई असामाजिक तत्व जातिगत विद्वेशों के नाम पर समाज को तोड़ने में लगे हुए हैं। उनका कहना था कि यही तत्व पहले धर्मांतरण के लिए कार्य कर रहे थे। उन्होंने ठियोग के मन्दिरों में जातिगत स्तर पर प्रवेश न दिये जाने की बात को खारिज करते हुए कहा कि कुछ लोग इस प्रकार की बातों को आधार बनाकर अफवाहें फैलाते हैं ताकि समाज को तोड़ा जा सके। ◆◆◆

पञ्चगव्य विद्यापीठम् | **पञ्चगव्य गुरुकुलम्**

महर्षि वाग्भट्ट गौशाला व पंचगव्य अनुसंधान केन्द्र

'पंचगव्य' आज स्वतंत्र चिकित्सा पद्धति ; हमारी सोच-हमारा प्रयास

पंचगव्य गुरूकुलम् में पाठ्यक्रम चलाने का उद्देश्य उच्च कोटी के वैज्ञानिक एवं दक्ष लोग तैयार करना है जिनकी चिकित्सा विज्ञान एवं वैज्ञानिक प्रणाली के मूलभूत सिद्धान्तों पर मजबूत पकड़ हो, अपनी विशेषज्ञता में गहरी समझ हो, नई समस्याओं को सुलझाने की अभिनव क्षमता हो और निरंतर सीखते रहने एवं समय-समय पर विभिन्न ज्ञानियों से पारस्परिक मिलाप की भावना हो। इसके अलावा भी विद्यार्थियों को चाहिए कि वे देश एवं समाज की मांग और अभिलाषा के अनुरूप अपनी निष्ठा, साहस, जागरूकता, संवेदनशीलता को स्वतंत्र रूप से विकसित करें। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की प्रकृति, हमारे स्वास्थ्य संबंधी पहलुओं एवं उनके बौद्धिक कौशल संबंधी ज्ञान को बढ़ाने के लिए तैयार किया गया है। जिसमें भारत की प्राचीनतम विद्या 'नाड़ी विज्ञानम्' एवं 'नाभि विज्ञानम्' जो लुप्तप्राय हो चुकी है, उसे पुनर्जीवित कर लोगों को रोगों की जांच में हो रहे भारी खर्च से मुक्ति दिलाना है। इन सभी उद्देश्यों के लिए नि:स्वार्थ भाव से पंचगव्य गुरूकुलम् सदैव संकल्पबद्ध है। मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थैरेपी एवं अन्य पाठ्यक्रम आज के युवाओं को उच्च कोटि की चिकित्सा सेवा देने के लिए तैयार करने की सोच के साथ शुरू किया गया है। जिसमें युवाओं का भविष्य उज्ज्वल है। ◆◆◆

एडवांस स्टडीज से सीखें जल संरक्षण

-यादवेन्द्र शर्मा

राजधानी शिमला के चौड़ा मैदान से समरहिल तक फैला अंग्रेजों के समय का वॉयसरिगल लॉज (एडवांस स्टडीज) आज भी जल संरक्षण की मिसाल है। यह प्रदेश का अपनी तरह का पहला और इकलौता ऐसा भवन है जिसकी छत पर पड़ने वाली बारिश के पानी की हर बूंद का संरक्षण होता है। इससे 70 एकड़ में फैले वर्तमान के भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान (एडवांस स्टडीज) में अध्ययन करने वालों व कर्मचारियों को कभी पानी की किल्लत महसूस नहीं होती। लॉन व परिसर में फूलों की क्यारियों को सींचने की सुविधा भी मिलती है। वॉयसरिगल लॉज के लॉन के नीचे करीब एक लाख लीटर से अधिक वर्षा जल संग्रहण का ब्रिटिशकाल से प्रावधान है। अब भारत सरकार ने दो और नए टेंक बनाए हैं। अब कुल सात टेंक हैं, जिनमें एक भवन के अंदर और छह बाहर हैं। यह रिज मैदान से करीब तीन किलोमीटर दूर शिमला के प्रवेश द्वार बालूगंज के समीप समरहिल की पहाड़ी पर है। हर टेंक की क्षमता 30 से 35 हजार लीटर है यानी सवा लाख लीटर से अधिक पानी एकत्र किया जा सकता है। जमीन के नीचे टेंकों के पानी को मोटर की मदद से बाहर निकाला जाता है। इतना ही नहीं इस भवन की छत पर 24 छोटे टैंक बनाए गए हैं। जो सामान्य पानी की जरूरत को पूरा करते हैं। आग इत्यादि लगने की घटना की स्थिति में भवन में बिछाई पाइपों से अपने आप पानी निकलेगा और आग को काबू में किया जा सकेगा।

एलिजाबेथन बारोक शैली में बना है भवन: वास्तुकला और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर इस वॉयसरिगल लॉज भवन का निर्माण 1884 में शुरू हुआ और 1888 में पूरा हुआ। भवन का प्रारूप कैप्टन कोल और प्रसिद्ध वास्तुकार हैनरी इरविक द्वारा डिजाइन किया गया है। इसे एलिजाबेथन बारोक शैली में बनाया गया है। उसी समय वर्षा जल संचय की व्यवस्था भी की गई। लॉर्ड डुरिन ने 23 जुलाई 1888 को वायसरिगल लॉज में निवास शुरू किया। लार्ड डफरिन से लेकर माउंटबेटन तक ने अपने शासन के दौरान इसे आवास रखा। यह इमारत कई महत्वपूर्ण घटनाओं की साक्षी रही है। ◆◆◆

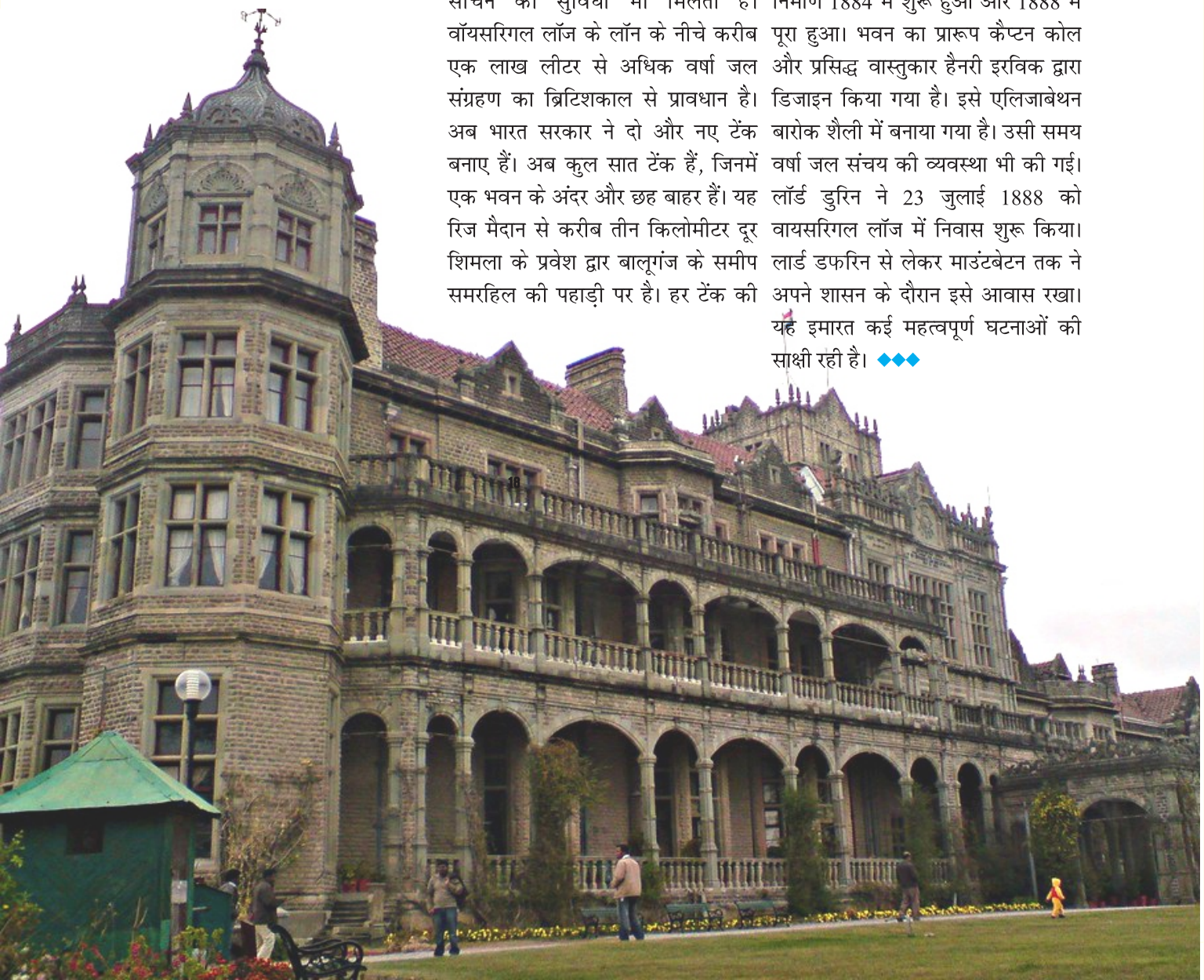

हिमाचल को मिला कृषि कर्मण्य पुरस्कार

...-वि.सं.के. शिमला

कृषि मन्त्री डॉ0 रामलाल मारकंडा व प्रधान सचिव ओंकार चंद ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों कर्नाटक में प्राप्त किया सम्मान । कुल खाद्यान्न उत्पादन श्रेणी-2 में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए कृषि विभाग को कृषि कर्मण्य पुरस्कार 2016-17 प्रदान किया गया है।

यह पुरस्कार केंद्रीय कृषि मंत्रालय की तरफ से दिया गया है, जिसमें प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया गया । कृषि मंत्री डॉ. रामलाल मारकंडा, प्रधान सचिव कृषि ओंकार चंद शर्मा और निदेशक कृषि डॉ. राकेश कुमार कौंडल ने वीरवार को कर्नाटक के टुमकुर में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों से यह पुरस्कार प्राप्त किया। मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने खाद्यान्न उत्पादन में इस विशिष्ट उपलब्धि के लिए कृषि विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी है। उन्होंने कहा सरकार सफल रही है, जिस कारण खाद्यान्न उत्पादन में बढ़ौतरी हुई है।

कृषि मंत्री डा. रामलाल मारकंडा और प्रधान सचिव कृषि ओंकार चंद शर्मा ने भी इस उपलब्धि के लिए विभाग के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों को बधाई दी है। कृषि विभाग के निदेशक डा. राकेश कुमार कौंडल ने कहा कि वर्ष , 2016-17 में प्रदेश में कुल खाद्यान्न उत्पादन 1562-73 लाख टन हुआ। इसके अलावा विभाग ने पॉली हाउस खेती, फसल विविधिकरण, सूक्ष्म सिंचाई, प्राकृतिक खेती, सिंचाई सुविधाओं, यंत्रीकरण और मृदा स्वास्थ्य प्रबंधन को बढ़ावा देने की दिशा में भी सराहनीय कार्य किया है। उन्होंने कहा कि कृषि को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश सरकार की तरफ से चलाई जा रही महत्वकांक्षी योजनाओं को किसानों ने जमीनी स्तर पर अपनाया है, जिसके परिणामस्वरूप यह उपलब्धि हासिल हुई है। ◆◆◆

विश्व पुस्तक मेले में हिमाचल के साहित्यकारों की दमदार उपस्थिति

दिल्ली के प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेले में हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला के तत्वावधान में हिमाचल के साहित्यकारों ने अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करवाई। कार्यक्रम का शुभारंभ 5 जनवरी को दिल्ली स्थित हिमाचल भवन के सभागार में पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन दर्शन पर परिसंवाद के साथ किया गया। इस परिसंवाद के माध्यम से अटल जी के जीवन और उनके विचारों पर चिंतन किया गया। उनके जीवन चिंतन पर आधारित एक पुस्तक का भी इस अवसर पर विमोचन किया गया। पुस्तक मेले के दूसरे दिन, 6 जनवरी को हिमाचल कला संस्कृति भाषा अकादमी शिमला द्वारा पुस्तक लोकार्पण और कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया।

इसमें पांचजन्य के पूर्व संपादक और पूर्व राज्यसभा सांसद तरूण विजय बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित रहे। उन्होंने डा. दयानंद के काव्य संग्रह- आभास, उमा ठाकुर की पुस्तक- महासुवी लोक संस्कृति, पामेला ठाकुर का उपन्यास- नायिका, सुमित राज वशिष्ठ की अंग्रेजी पुस्तक- लौंगवुड डेज, संदीप की कहानी संग्रह- माटी तुझे पुकारेगी, डा. शशि पूनम की पुस्तक - फेमिनिस्टक ट्रामा इन इंडियन सोसायटी, कल्पना गांगटा का काव्य संग्रह- सृजन, रूपेश्वरी शर्मा की पुस्तक - नानी दादी की लोक कथाएं व सुबोध कड़शोली का अंग्रेजी काव्य संग्रह इंक्रिप्शन मुख्य रूप से शामिल रहे। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में आचार्य देवेंद्र देव की अध्यक्षता में कविता पाठ हुआ। कवि सम्मेलन में डा. प्रियंका वैद्य, मुनीष तन्हा, चिरानंद, रूपेश्वरी शर्मा, दयानंद शर्मा, सुमित राज वशिष्ठ, उमा ठाकुर, कल्पना

गांगटा, अर्चना शर्मा, दीपक कुल्लवी, सुशांत वर्तमान, कुमुद, डा. राकेश शर्मा, डा. कृष्ण मोहन पांडे ने अपनी कविता पाठ से श्रोताओं की वाहवाही लूटी। अकादमी सचिव डा. कर्म सिंह ने कहा कि आगामी वर्ष में कार्यक्रम को और विस्तार देने का प्रयास किया जाएगा। ◆◆◆

हल्दी, शहद, कालीमिर्च, दालचीनी

-डॉ. दीपनारायण

सर्दियों का मौसम शुरू होते ही गुनगुने दूध या पानी में आधा चम्मच हल्दी तथा एक चम्मच शहद डालकर रोज एक-दो बार पीना शुरू कर दें। बच्चों के लिये यह बहुत लाभदायक है। दालचीनी का चूर्ण भी आधा चम्मच साथ ले सकते हैं। रात को सोते समय 2-4 खजूर दूध के साथ लेना बहुत अच्छा है। इन उपायों से रोगनिरोधक शक्ति (इम्यूनिटी) बहुत बढ़ जाती है, आसानी से सर्दी के रोग नहीं होंगे। अम्ल-पित्त बढ़ा हो तो शायद यह सब नहीं पचेगा। अत: पहले उसका इलाज कर लें। दूध पैकेट का, नकली या विदेशी गाय का हो तो बिना दूध के ले सकते हैं। भैंस का दूध विषैला तो नहीं है पर आलस व वात रोग पैदा करता है, बुद्धि के लिये ठीक नहीं है।

काली मिर्च का प्रयोग

काली मिर्च संक्रामक रोगों के लिए बहुत सरल तथा उत्तम उपाय है। यह हमारे रक्त-प्रवाह को सुचारू रखती है, रक्त का शोधन करती है तथा शक्तिशाली एंटीबायोटिक, एंटीएलर्जिक दवा का काम करती है। अत: दूध के साथ एक चुटकी काली मिर्च लेना हितकर है। ऊपर लिखे प्रयोगों के साथ काली मिर्च भी प्रयोग में लाना उपयोगी रहेगा।

नाभी में लगाएं

नाभि में गाय का घी हींग मिलाकर लगाने से सर्दी का प्रभाव नहीं होता है। कड़वी खुमानी या चुलई का तेल लगाने से भी लाभ मिलता है।

मक्की, मेथी, सोए की रोटी

मेथी, सोए के पत्ते डालकर मक्की की रोटी बनाकर खाएं। बहुत स्वादिष्ट होती है साथ ही अनेक रोगों से, यहां तक कि टीबी तक से बचाव करती है। ध्यान रखें कि मक्की श्डिकाल्ब डबलश आदि श्बीटीश अथवा श्जीएमश न हो। पहाड़ी मक्की का आटा ढूंढकर लाएं।

देसी बाजरे से स्वास्थ्य

देसी बाजरे की रोटी, खिचड़ी इत्यादि बनाकर खाएं। अनेक रोग ठीक हो जाएंगे। रक्त की कमी, दांतो का दर्द, जोड़ों का दर्द, कैल्शियम की कमी इत्यादि समस्याएं एक-दो मास में छूमंतर हो जाएंगी। पर ध्यान रहे कि बाजरा भी तो देसी होना चाहिए।

मोटे अनाज बहुत उपयोगी

कोदा, रागी, कांगणी, ओगला, बथुआ, जौ, चना, चौलाई आदि मोटे अनाजों (मिलेट्स) का प्रयोग करेंगे तो अनेक रोग अनायास ठीक हो जाएंगे। ब्रह्मसुतली या जनेऊ (हर्पीजजोस्टर), मसूड़ों की सूजन, दांत दर्द, दांतों की सड़न, रक्ताल्पता (ऐनीमिया), कैल्शियम की कमी, जोड़ों की दर्द, मधुमेह, थायरायड आदि रोग कभी जीवन में नहीं होंगे। मोटे अनाजों से बुढ़ापा बहुत देरी से आएगा। आप देखेंगे कि आप निरंतर स्वस्थ होते जा रहे हैं। हमने जब से मोटे अनाजों का प्रयोग छोड़ा है तब से हमारे रोग बढ़े हैं, यह ध्यान रखें। यथासंभव इन अनाजों को प्राप्त करें, किसानों को उगाने के लिए प्रोत्साहित करें। गर्मियों के मौसम में गर्म प्रकृति के अनाज के स्थान पर शीतल प्रकृति के अनाज ज्वार, जौ इत्यादी का प्रयोग अनुकूल है।

गेहू के आटे में मिलाएं

आटा गूंधते समय उसमें गाजर, मूली, बथुआ, चौलाई, सोया इत्यादि डालें । यह भी स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभकारी सिद्ध होगा। मूली का प्रयोग करते समय भूल कर भी दूध से बने किसी भी पदार्थ का प्रयोग न करें।' अकेले गेहूं के आटे का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। अत: उसमें 25 से 50% तक किसी मोटे अनाज (मिलेट्स) मिलाया जाना चाहिए।

गुणकारी आंवला

आंवला शीतकाल में ही होता है। उसका भरपूर प्रयोग करना चाहिए । रोग निरोधक शक्ति बढ़ने से शीतकालीन रोग नहीं होंगे । आने वाली गर्मियों तक भी इसका भरपूर लाभ मिलता रहेगा ।

आंवले का प्रयोग किसी भी रूप में किया जा सकता है। इसके गुण पकाने, उबालने, सुखाने से नष्ट नहीं होते। बस केवल मुरब्बे व कैंडी का प्रयोग न करें। क्योंकि उसमें अनेक प्रकार के विषैले रसायन, संरक्षक पदार्थ मिले होते हैं। चीनी भी एक विषैला पदार्थ ही है। ◆◆◆

सूचना

इस वर्ष मातृवन्दना संस्थान द्वारा, मातृवन्दना पत्रिका में स्तरीय लेख लिखने वाले लेखकों को पुरस्कृत करने की योजना बनी है। सम्बन्धित लेखकों को पत्र द्वारा सूचित किया जाएगा।

मातृवन्दना पत्रिका में मई 2019 से मार्च 2020 के बीच छपे 'संपादक के नाम पत्र' की प्रति अपने पूर्ण पते के साथ मातृवन्दना संस्थान कार्यालय, डॉ0 हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला-4 को 31 मार्च 2020 तक भेजें।

प्रकृति और गाय का निष्ठा एवं तत्परता से संरक्षण करें।

प्रकृति निश्चय से जीवनदात्री है। वास्तव में प्रकृति ही प्रेरक तत्व है जो मानव मन में सहजता, सरलता, सहिष्णुता, रचनात्मकता, समभाव, सौन्दर्य, परोपकार आदि उत्कृष्ट गुणों का संचार करती है। यह हमें अपने विविध रूपों से उपकृत करती है। अत एव हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि हम उसके संरक्षण में सदा तत्पर रहें और उसे अपने अनुकूल बनाएं किन्तु सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि स्वार्थपरता, भौतिकता एवं विलासिता के दौर में आज मानव प्रकृति की महता को विस्मृत कर उसे विनष्ट करने पर तुला हुआ है। जो धरा समस्त चराचर को धारण किए हुए है उसे हमने निजि स्वार्थवश तात्कालिक लाभ हेतु अपनी आवश्यकता के अनुरूप शहरीकरण, विस्तृत राजमार्ग, खनिज प्राप्ति एवं खनन आदि प्रक्रियाओं से विदीर्ण कर दिया है। साथ ही बढ़ती जनसंख्या को देखते हुए हरित क्रान्ति के नाम पर रासायनिक उर्वरकों एवं जहरीले कीटनाशकों का अतिशय प्रयोग कर उसे विषाक्त कर दिया है। प्रारम्भ की वह खेती जो पूर्णतया जैविक थी एवं पशु-धन पर आधारित थी, अधिक उपज के लालच में उसको विदेशी बीजों रासायनिक खादों एवं विषैले कीटनाशकों के हवाले कर दिया गया है। इनकी सहज प्राप्ति, सरकारी अनुदान और बढ़ती उपज ने कृषकों तथा कृषि योग्य भूमि को इतना अभ्यस्त बना डाला है कि पुन: जैविक खेती की ओर लौटना असम्भव प्रतीत हो रहा है। वनों एवं चरागाहों की कमी से तथा बैलों के बदले टैक्टर आदि से खेत जोते जाने से पशु-धन घटता जा रहा है जिस कारण कृषक पूर्णतया जैविक खेती की ओर कदम बढ़ाने में कतरा रहे हैं। तथापि वर्तमान में आधुनिक खेती के दुष्परिणामों को देखते हुए कृषक वर्ग अपनी पारम्परिक खेती की ओर वापिस लौटने के लिए विवश दिखाई दे रहा है।

रासायनिक खादों और जहरीले कीटनाशकों से जमीन की उर्वरा शक्ति क्षीण होती जा रही है। सिंचाई हेतु अत्यधिक मात्रा में जल की मांग बढ़ रही है जबकि जमीन के नीचे जलस्तर निरन्तर घटता जा रहा है। गोबर की खाद से जमीन में नमी बनी रहती थी और फसलों की सिंचाई के लिए कम मात्रा में जल की आवश्यकता पड़ती थी। जिसके 10 ग्राम गोबर में तीन सौ करोड़ जीवाणु उत्पन्न होते हैं ऐसी देशी गाय किसानों की गोशालाओं से गायब हैं। हां कहीं-कहीं विदेशी जरसी एवं दोनस्ली गायों ने उन गोशालाओं में अपने लिए अवश्य जगह बना डाली है। जिनके दुग्ध निर्मित पदार्थ आज पशुविशेषज्ञ एवं वैज्ञानिक स्वास्थ्यवर्धक नहीं मानते। पृथ्वी और गाय को वैदिक काल से ही माता की संज्ञा दी गई है। संस्कृत का गो शब्द पृथिवी और गाय दोनों का पर्यायवाचक है। अन्न, जल, वायु, वनस्पति, पुष्पपल्लव फलादि प्रदान करने वाली पृथिवी माता कामधेनु है जो हमें आश्रय देकर हमारी हर मनोकामना पूर्ण करती है।

भारतीय देशी-पहाड़ी गाय तो है ही कामधेनु जिसका ए-2 श्रेणी दूध एवं उससे निर्मित पदार्थ अमृत तुल्य एवं स्वास्थ्य वर्धक हैं। उसका गोबर सर्वश्रेष्ठ उर्वरक है। रेडिएशन कम करने की उसमें क्षमता है, साथ ही रक्तचाप, अस्थिरोग आदि को शामिल करने में प्रभावी है। गोमूत्र से बना अर्क वात-पित-कफ रोगों का नाशक है, आज उसी पंचगव्य से रोगों का शमन किया जा रहा है। ◆◆◆

With Best Compliments from:

SHIVALIK HOSPITAL

Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)

Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma

MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma

MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

नव वर्ष पर मंत्री द्वारा 'बुके' लेने से इनकार।

आमतौर पर सार्वजनिक जीवन से जुड़ी हस्तियों को विभिन्न लोगों द्वारा नव वर्ष या पर्व त्यौहारों आदि विभिन्न खुशी के मौकों पर गुलदस्ते, मिठाई, शाल, फल आदि भेंट करने का रिवाज है परंतु वर्ष 2020 के दस्तक देने से कुछ दिन पूर्व आंध्र प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री अदीमुलापी सुरेश के मन में एक अद्भुत विचार कौंधा और उन्होंने नव वर्ष को एक अर्थपूर्ण तथा कल्याणकारी अवसर बनाने का निर्णय लिया। नव वर्ष से कुछ दिन पूर्व उन्होंने यह घोषणा कर दी कि उन्हें बधाई देने के लिए आने के इच्छुक लोग फूल, फल या मिठाइयां आदि लाने की बजाय स्कूल के बच्चों को दी जाने वाली कापियां, पैन और पैंसिलें आदि लेकर आएं। श्री सुरेश ने यह भी कहा कि ''कापी-पैन और पैंसिलों आदि के बिना पढ़ाई संभव नहीं है परंतु प्रत्येक बच्चे को यह उपलब्ध नहीं हो पाती, लिहाजा मेरी पार्टी वाई.एस.आर. के कार्यकर्ता और ऐसे अवसरों पर बधाई देने आने वाले अन्य लोग फूलों, फलों और मिठाइयों आदि पर फिजूलखर्ची न करें।'' उनके इस आह्वान का उनकी पार्टी के सदस्यों तथा अन्य लोगों पर बहुत ही अच्छा असर पड़ा और 31 दिसम्बर तथा 1 जनवरी की मध्य रात्रि से ही उनके गांव में जहां वे नया साल मनाने के लिए गए हुए थे, उनके निवास के बाहर पढ़ाई में काम आने वाले समान के साथ बधाई देने के लिए आने वालों की लम्बी कतार लग गई। श्री सुरेश के सूत्रों के अनुसार इस अवसर पर लगभग एक ही दिन में 25,000 से अधिक कापियों के अलावा बड़ी संख्या में पेन, पैंसिलें इक्कठी हो गई और उसके बाद के दिनों में भी यह सिलसिला जारी रहा। उन्होंने जमा हुई सारी स्टेशनरी जरूरतमंद छात्रों में बांटने के लिए शिक्षा अधिकारियों को सौंप दी। नव वर्ष के अवसर पर पारंपरिक उपहारों की बजाय छात्रोपयोगी वस्तुएं उपहार स्वरूप मांग कर और जरूरतमंद बच्चों में उनका वितरण कर श्री अदीमुलापी सुरेश ने राजनीतिज्ञों को एक नई राह दिखाई है। यदि सभी राजनीतिज्ञ इस प्रकार की सकारात्मक सोच अपना लें तो समाज में कुछ बेहतर बदलाव लाने में सहायता अवश्य मिल सकती है। ◆◆◆

सामाजिक सद्भाव: वर्तमान में प्रासंगिकता

जिस सामाजिक व्यवस्था में व्यक्ति और व्यक्ति के बीच अर्थात् समाज के व्यवहार में परस्पर अनुकूलता होगी, वहां व्यक्ति की स्वतन्त्रता और उसका सम्मान सुरक्षित होगा''। पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का यह दृष्टिकोण समाज को जोड़ने का सबसे बड़ा जरिया है। आजकल समाज में एक समुदाय द्वारा दूसरे समुदाय के लोगों पर आक्रमण कर उनको सामूहिक हिंसा के शिकार बनाने की घटनाएं व आरोप-प्रत्यारोप बढ़ रहे हैं। हिंसा की प्रवृत्ति समाज में परस्पर संबंधों को नष्ट कर सौहार्द को खत्म कर रही है।

समाज के विभिन्न वर्गों को आपस में सदभावना, संवाद तथा सहयोग बढ़ाने के लिये प्रयासरत रहना चाहिए व समाज के सभी वर्गों में सदभाव, समरसता व सहयोग आज नितांत आवश्यक है। देश के विकास के लिये यह बेहद आवश्यक है कि देश के सामने जो चुनौतियां / समस्याएं हैं उनके समाधान के लिये सभी पक्षकारों को मिलकर काम करना होगा। नागरिकता संशोधन कानून आने के बाद हुये हिंसक दंगों ने जिस तरह देश के अन्दर अराजकता का माहौल बनाया, एक परिपक्व लोकतन्त्र में इसकी जगह नहीं होनी चाहिए। यह बढ़ते भारत, बदलते भारत के संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस देश की ताकत सामाजिक सद्भाव है और दुनिया में और ऐसा कोई भी देश नहीं होगा जिसमें आपसी मत, पंथ, धर्म के माध्यम से सतत बढ़ने की प्रेरणा हो। आशा है कि 2020 हमारे देश के सामाजिक परिवेश और जीवन शैली को बदलने वाला सिद्ध होगा। एक बार फिर से राष्ट्रीयता, मानवता और भाई-चारे पर जोर दिया जाने लगा है और यही भारत की संस्कृति का मूल तत्व है। बस आवश्यकता इस बात की है कि संवाद स्थापित हो। भारत के प्रति श्रद्धा बनी रहे, प्रेम बना रहे यही 'मैं' और 'मेरे' के भाव को मिटाता है। आपसी दूरी कम हो, हम सब एक हैं व बने रहें यह भावना बने इसके लिये सन्तों, शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। संघ चाहता है कि समाज की सोच बदले इसके लिये मत, पंथ, मठ, मन्दिर, आश्रम, धर्माचार्य, जाति, साधु-सन्त, सम्प्रदाय, संस्था व गैर-सरकारी संगठनों का सहयोग लेकर समस्त समाज को राष्ट्रीय सोच से जुड़ना पड़ेगा। जब-जब आपसी सौहार्द में दोष आए, देश कमज़ोर हुआ, देश विरोधी ताकतों ने देश तोड़ने का कार्य किया, समाज तोड़ने का काम किया। देश में सभी महापुरुषों का सम्मान हो उनके प्रति श्रद्धा व प्रेम बना रहे, आपस में कोई भी बैर द्वेष न हो, सभी में समन्वय हो इस पर जोर देना पड़ेगा। धैर्य, निष्ठा, समर्पण एवं **'समग्र दृष्टि'** आने वाले समय में बेहतर समाज के निर्माण के लिये एक अहम कड़ी का काम करेगी। अन्ततः अकेले सरकार समाज में आपसी भाईचारे और मित्रता को सुनिश्चित नहीं कर सकती। अक्सर सामाजिक सद्भाव विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों के कारण ही उत्पन्न होता है। **'सद्भावना मिशन'** के लक्ष्य की प्राप्ति तभी संम्भव है जब प्रत्येक नागरिक समाज के इस खतरे को पहचान कर अपना योगदान देश में पूर्ण शान्ति और सामंजस्य के लिए सुनिश्चित करेगा। ◆◆◆

एक शाम जिंदगी के नाम

एक शाम
अपनी जिंदगी के नाम लिखूंगा।
जो बीत चुका है कल
उसे भी प्रेम से,विश्वास से
मोहब्बत से लिखूंगा।
इम्तिहान तो बहुत दिए
मगर फिर भी
प्रेम से समर्पण से
सबको मिलूंगा।
जीवन में अच्छे और बुरे
दोनों तरह के लोग मिले ,
मगर फिर भी
समदर्शी होकर मैं
सब को गले लगा।
दर्द बेरुखाई के घाव
अंतस पर देते लोग
फिर भी मैं
खिला चेहरा लिए
मुस्काता हुआ
सब को मिलूंगा।
भूल कर सब बातों को
भावों की एकता के साथ
एक शाम जिंदगी के नाम लिखूंगा।

राजीव डोगरा, कांगड़ा

हम बेटियां

अक्सर एक याद आंखों से बह निकलती है।
याद उस वक्त की जब मैं छोटी थी।
याद उस वक्त की जब मैं अपने पापा की बेटी थी।
याद उस वक्त की जब मेरी हर इच्छा पूरी होती थी।
बहुत ढूंढती हूं वो वक्त, पर ना जाने कहां खो गया,
बड़े होने पर मानो जैसे सब कुछ ही बदल गया।
मेरा बचपन एक दिन में छिन गया जब,
अब तुम इनकी अमानत हो, यह कहकर नये घर भेज दिया ।
फिर वह घर और उसका हर रिश्ता ही बदल गया,
कल तक जो अपने थे वो पराये हो गए,
कुछ नए लोग, कुछ नए रिश्ते जीवन में शामिल हो गए।
अब न पहले जैसी वह मस्ती है न शरारतों भरा वह जोश ।
बेहिसाब मुझ पर अब जिम्मेदारियां,
कल तक जो बेटी थी, आज वह मां बन गई,
और इस बदली परिभाषा से जीवन की भाषा ही बदल गई।
प्यार मिलता बहुत है अब भी, फिर भी एक कमी सी लगती है,
मुझे आज भी उस घर की याद बहुत खलती है।
बेटियां पराया धन है, यह नियम जिसने भी बनाया होगा,
एक पल के लिए रोना तो उसे भी आया होगा।।

दीपिका सोनी, गांव बलोह,
त0 घुमारवीं

मिट रही है प्रीत की रीत
ढह रही है बालू की भीत
स्वार्थ के हैं मित्र
लग रही कितनी बात विचित्र।।
आज दिलों के हैं बंद किवाड़
खा रहा है, पर खेती को बाढ़
सूना सूना लग रहा जहां
भाग गई अब वह शांति कहाँ।।
घुटा-घुटा सा है सबका मन
रंगहीन शोषित बन गया तन
याद आ रहे हैं बीते पल
वृक्षों पर नहीं पकते फल।।
लग गए समाज सुधरी
कैसे निभेगी दुनियादारी
लोप हो रहे स्वस्ति भाव
केसे भरे अब तन के घाव।।
हो रहे खत्म किस्से पुराने
राम की बातें राम ही जानें
'प्रसाद' दें हम किसको दोष
प्रकटें अब हम किस पर रोष।।

राम प्रसाद शर्मा
सिहाल कांगड़ा

लोप हो रहे, स्वस्ति भाव

अगले साल येरुशेलम में

-विकल्प सिंह ठाकुर

यहूदी और हिन्दुओं में कई समानताएं हैं। दोनों प्राचीन जातियां हैं जिनकी प्राचीन संस्कृतियां और धर्म हैं । दोनों ने ही आपसी फूट के कारण भारी नुक्सान उठाया है और दोनों ही शताब्दियों तक विदेशियों के अत्याचार सहते रहे। लेकिन आज यहूदियों ने अपने अस्तित्व के लिये लड़ना सीख लिया है जबकि हिन्दू जाति आज भी प्रमाद और आपसी फूट का शिकार है।

सदियों पहले विदेशी आक्रान्ताओं के हमलों के कारण इजराइल की संतान कहे जाने वाले यहूदियों को अपने सबसे पवित्र शहर येरुशेलम को छोड़ना पड़ा था। उसके बाद कई सदियों तक उन्होंने दुनिया के विभिन्न देशों में रहकर अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ी। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उन्होंने विज्ञान, कला और व्यापार में असाधारण दक्षता प्राप्त की। आइन्स्टाइन ,सिगमंड फ्रॉयड और नील्स बोहर जैसे यहूदियों ने वैश्विक उन्नति में अभूतपूर्व योगदान दिया। इसके बावजूद भी यहूदियों पर समय समय पर अत्याचार होते रहे। लेकिन उन बहादुर लोगों नें साहस नहीं हारा। हर साल वो लोग एक दूसरे को मिलते और कहते , "अगले साल येरुशेलम में।" उन संघर्षों के दिनों में भी येरुशेलम यानि अपने सबसे पवित्र शहर को देखने की आकांक्षा हर यहूदी के मन में जीवित रही। सदियां बीतती गयी।

कभी रोमनों ने यहूदियों पर नरसंहार किये .. कभी रूसी शासकों ने उनपर हिंसा करवाई .. और कभी हिटलर ने गैस चेम्बर्स में लाखों यहूदियों को मरवा दिया। लेकिन उनके मन में एक ही संकल्प रहा "अगले साल येरुशेलम में !" दुनिया भर के यहूदियों की अथक तपस्या और असंख्य बलिदानों के परिणाम स्वरूप 14 मई 1948 को इजराईल का जन्म हुआ। यहूदियों को आखिरकार उनका देश मिल गया। लेकिन फिर भी समस्याएं समाप्त न हुई थी। इजराईल के जन्म से बौखलाए अरब देशों ने उस पर हमला बोल दिया। कई दिनों तक चले खूनी संघर्ष के बाद आखिरकार यहूदी जीत गये। उसके बाद 1967 में भी अरब देशों ने इजराईल पर हमला बोला। लेकिन मात्र 6 दिन के युद्ध के बाद अरबों को हार का सामना करना पड़ा। आज भी दुनिया भर के मुसलमान देश इजराईल को अपना शत्रु मानते हैं और इजराईल को नेस्तोनाबूत करने के सपने देखते हैं। लेकिन यहूदियों की देशभक्ति और बहादुरी के आगे सब हार जाते हैं। यदि एक यहूदी कि जान जाये तो बदले में इजराईल सौ दुश्मनों को मार डालता है। यही कारण है कि किसी समय दुनिया में दर-बदर भटकते लोग आज शान से अपने देश में रह रहे हैं।

आज भारत के कई टुकड़े हो चुके हैं। श्रीराम के पुत्र लव का शहर लाहौर आज भारत में नहीं है। पवित्र सिन्धु नदी आज भी भारत के ध्वज के नीचे नहीं बहती। अर्बन नक्सलियों और टुकड़े-टुकड़े गैंग द्वारा देश के और भी कई टुकड़े करने का षडयंत्र चल रहा है। इसके अतिरिक्त जिहाद की विचारधारा के माध्यम से मुसलमान नौजवानों में जहर भरा जा रहा है। ऐसे में जब हिन्दू समाज के सामने अस्तित्व का संकट आन पड़ा हो तो उसे यहूदियों से सीखना चाहिये। सीखना चाहिये कि कैसे अनगिनत बलिदान देकर अपने देश , अपने धर्म के लिए लड़ा जाता है। हर हिन्दू को चाहिये कि इजराईल और यहूदियों का इतिहास पढ़ें ताकि आने वाले निराशा और संघर्ष के समय में वो भी विश्वास के स्वर में कह सकें "अगले साल येरुशेलम में ◆◆◆

विश्व एकता हेतु भारत का संविधान प्रतिबद्ध

... -डॉ. जगदीश गांधी

भारत की आजादी 15 अगस्त 1947 के बाद 2 वर्ष 11 माह तथा 18 दिन की कड़ी मेहनत एवं गहन विचार-विमर्श के बाद भारतीय संविधान को 26 जनवरी 1950 को आधिकारिक रूप से अपनाया गया। इस दिन भारत एक सम्पूर्ण गणतान्त्रिक देश बन गया। तब से प्रति वर्ष 26 जनवरी को हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते आ रहे हैं। हमें विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश होने का गर्व प्राप्त है। 26 जनवरी, 1950 भारतीय इतिहास में इसलिये महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारत का संविधान, इसी दिन अस्तित्व में आया और भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। भारत का संविधान लिखित एवं सबसे बड़ा संविधान है। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विश्व के अनेक संविधानों के अच्छे प्रावधानों को अपने संविधान में आत्मसात करने का प्रयास किया है।

मातृभूमि के सम्मान एवं उसकी आजादी के लिये असंख्य वीरों ने अपने जीवन की आहुति दी थी। देशभक्तों की गाथाओं से भारतीय इतिहास के पन्ने भरे हुए हैं। देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों की संख्या में भारत माता के वीर सपूतों ने, भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना सर्वस्य न्यौछावर कर दिया था। ऐसे ही महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के कारण हमारा देश, गणतान्त्रिक देश बन सका। आज हमारा समाज परिवर्तित हो रहा है। मीडिया जगत पहले से काफी सक्रिय हो गया है। जनता भी जाग रही है। युवा सोच का विकास हो रहा है। शिक्षा का स्तर बढ़ रहा है। अति आधुनिक टेक्नोलॉजी से लैस युवकों की संख्या तेजी से बढ़ती जा रही है।

26 जनवरी को सभी देशभक्तों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व भारतवर्ष के कोने-कोने में बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता हैं। प्रति वर्ष इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती है। भारत की राजधानी दिल्ली समेत प्रत्येक राज्य तथा विदेशों के भारतीय राजदूतावासों में भी यह त्यौहार बड़े उल्लास व गर्व के साथ मनाया जाता है। 26 जनवरी का पर्व देशभक्तों के त्याग, तपस्या और बलिदान की अमर कहानी समेटे हुए है। प्रत्येक भारतीय को अपने देश की आजादी प्यारी थी। भारत की भूमि पर पग-पग में उत्सर्ग और शौर्य का इतिहास अंकित है। किसी ने सच ही कहा है- "कण-कण में सोया शहीद, पत्थर-पत्थर इतिहास है"। ऐसे ही अनेक देशभक्तों की शहादत का परिणाम है, हमारा गणतान्त्रिक देश भारत। 26 जनवरी का पावन पर्व आज भी हर दिल में राष्ट्रीय भावना की मशाल को प्रज्जलित कर रहा है। लहराता हुआ तिरंगा रोम-रोम में जोश का संचार कर रहा है, चहुं ओर खुशियों की सौगात है। हम सब मिलकर उन सभी अमर बलिदानियों को अपनी भावांजली से नमन करें, वंदन करें। संसार के महान विचारक विक्टर ह्यूगो ने कहा था 'इस संसार में जितनी भी सैन्यशक्ति है उससे भी अधिक शक्तिशाली एक और चीज है और वह है एक विचार जिसका कि समय आ गया है।' संसार में वह विचार जिसका समय आ चुका है केवल भारत के पास है और वह विचार है- 'उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात उदार चरित्र वालों के लिए सम्पूर्ण वसुधा अपना स्वयं का ही परिवार है। हम सभी संसार वासी एक ही परमात्मा की संतानें होने के नाते सारा संसार हमारा अपना ही परिवार है।

भारतीय संविधान निर्माता समिति के अध्यक्ष डा0 भीमराव अम्बेडकर ने संविधान निर्माता समिति के सभी सदस्यों तथा संविधान सभा की सर्वसम्मति से 'भारतीय संविधान में अनुच्छेद 51' को सम्मिलित किया जिसमें संसार की समस्त सैन्य शक्ति से अधिक शक्तिशाली विचार 'भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51' की भावना है-"भारत का गणराज्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की अभिवृद्धि करने का प्रयास करेगा। भारत का गणराज्य संसार के सभी राष्ट्रों के बीच न्यायसंगत और सम्मानपूर्ण संबंधों को बनाए रखने का प्रयत्न करेगा, भारत का गणराज्य अन्तर्राष्ट्रीय कानून का सम्मान करने अर्थात उसका पालन करने की भावना की अभिवृद्धि करेगा। भारत का गणराज्य अन्तर्राष्ट्रीय विवादों का हल माध्यम् द्वारा कराने का प्रयास करेगा। ◆◆◆

जेएनयू तर्कहीन विरोध की राजनीति का शिकार

-सुशील गर्ग

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में हुई हिंसक घटनाओं के बीच राजनीति उफान पर है। आरोप-प्रत्यारोपों का दौर जारी है। मीडिया में जांच से पहले ही निर्णय सुनाने का सिलसिला जारी है। जे0एन0यू0 अराजकता के चलते अपनी प्रतिष्ठा के सबसे निचले पायदान पर है।

सच पूछें तो अनुच्छेद 370 के संशोधन के बाद से ही विश्वविद्यालय में प्रारंभ हुआ विरोध अब तक थम नहीं सका है। वामपंथी दल मौका तलाश रहे थे कि बड़ी संख्या में तटस्थ विद्यार्थियों को अपने पक्ष में लामबंद कर सकें। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा बीस साल बाद की गयी फीसवृद्धि ने उन्हें यह अवसर दे दिया। सभी छात्र संगठनों ने इसका संयुक्त विरोध किया। आन्दोलन को छात्रों का अपेक्षित समर्थन न मिलते देख यह संगठन अराजकता पर उतर आये और छात्रसंघ ने इसकी अगुआई संभाल ली। विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा फीस वृद्धि में भारी कमी किये जाने के बाद आम विद्यार्थी इस आंदोलन से दूर होने लगा था। किन्तु वामदलों ने इसे समाप्त करने के बजाय परीक्षाओं के वहिष्कार की अपील की और जो विद्यार्थी अथवा शिक्षक परीक्षाओं में भाग ले रहे थे उनके साथ दुर्व्यवहार भी किया। कैंपस से बाहर रहने वाले छात्रों को आने पर परिणाम भुगतने की धमकी दी। इससे पहले कक्षाओं के वहिष्कार के नाम पर एक महिला प्राध्यापक को 32 घंटे तक क्लास रूम में बंधक बना कर जेएनयू की परंपराओं को कलंकित किया। एक अन्य हॉस्टल वार्डन महिला प्राध्यापक को उनके घर में ही घंटों बंधक बनाये रखा।

परिसर में तनाव तब बढ़ा जब अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने नये सेमेस्टर में प्रवेश लेने आने वाले छात्रों की सहायता करने और वाम दलों ने उन्हें प्रवेश न लेने देने की कोशिश की। इसमें वामदलों को असफलता हाथ लगी और अधिकांश छात्रों ने प्रवेश ले लिया। अपने आंदोलन को पिटता देख खीझे वाम दलों ने विश्वविद्यालय के सर्वर रूम को तहस-नहस कर प्रवेश प्रक्रिया को तकनीकी रूप से असंभव बना दिया। खबर यह भी है कि इसके लिये उन्होंने सर्वर रूम की देख-भाल करने वाले कर्मचारी को चाकू दिखा कर धमकाया।

5 जनवरी को हिंसा की उस घटना के रूप में सामने आया जिसके अस्पष्ट वीडियो फुटेज पूरे देश ने देखे। घटना के तुरंत बाद कुछ चैनलों पर एकतरफा रिपोर्टिंग का दौर शुरू हो गया।

अपने ऊपर मीडिया में लगाये जा रहे आरोपों का जवाब देने के लिये अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के कार्यकर्ताओं ने पत्रकार वार्ता की। गत छात्र संघ चुनाव में अभाविप की ओर से अध्यक्ष पद के प्रत्याशी रहे मनीष जांगिड़ ने बताया कि छात्रावास में प्रवेश करने वाले हमलावर नाम ले-ले कर परिषद कार्यकर्ताओं को खोज रहे थे। वे जिस कमरे में चार कार्यकर्ताओं के साथ छिपे थे उसमें उन्होंने दरवाजा तोड़ कर प्रवेश किया और उन्हें बुरी तरह घायल किया। मनीष के हाथ में दो फ्रैक्चर हैं।

सभी कार्यकर्ता घायल होने के कारण अपना पक्ष रखने में असफल रहे। यह जांच का विषय है कि हमलावर नकाबपोश कहां से और किसके बुलावे पर परिसर में आये। सुरक्षा व्यवस्था को धत्ता बता कर इतनी बड़ी संख्या में वे परिसर में कैसे प्रवेश कर सके, इसकी जांच भी जरूरी है। लेकिन जांच से पहले ही मीडिया में निर्णय सुना देने और एक स्थानीय घटना में प्रधानमंत्री-गृहमंत्री के नाम घसीटने की प्रतियोगिता प्रारंभ हो गयी, उससे लगा कि शिक्षा के एक संस्थान की गरिमा की चिन्ता कम और राजनैतिक बढ़त कायम करने की कोशिश ज्यादा है। जेएनयू जैसा अंतरराष्ट्रीय स्तर का संस्थान आज तर्कहीन विरोध की राजनीति का शिकार हो अपनी प्रतिष्ठा खो रहा है। ◆◆◆

ननकाना साहिब पर हुए पत्थराव की शर्मनाक घटना

ननकाना साहिब गुरु नानक देव की जन्मस्थली है। भारत के सिखों और हिंदुओं के लिए यह स्थान रामजन्मभूमि के समान ही पवित्र है। 3 जनवरी, 2020 को ननकाना साहिब गुरुद्वारे पर मुसलमानों की भीड़ ने पत्थरबाजी की और हिंसा को अंजाम दिया। साथ ही साथ इस भीड़ ने सिख समुदाय के प्रति अनाप-शनाप नारेबाजी भी की और उनके घरों पर भी पत्थर बरसाए। ननकाना साहिब को सिखों से मुक्त कराने और इसका नाम बदलकर गुलाम ए मुस्तफा रखने के नारे भी लगाए गए। इस घटना के मास्टरमाइंड वे लोग हैं जिन्होंने जगजीत कौर नामक एक सिख लड़की का सितम्बर, 2019 में बंदूक की नोक पर अपहरण कर, उसका जबरन धर्म परिवर्तन करवाकर मुसलमान से शादी करवाई। लड़की के परिवार द्वारा विरोध जताने पर भी इन आततायियों ने इस घटना को अंजाम दिया । इस घटना से पूरा विश्व स्तब्ध है। सम्पूर्ण मानव समाज इस हिंसा का पुरजोर विरोध करता है और भारत सरकार से मांग करता है कि पाकिस्तान को चेतावनी के लहजे में कहा जाए कि वह दोषियों को तुरन्त सजा दे और ननकाना साहिब व सिख भाई-बहनों की सुरक्षा की पूरी जिम्मेवारी ले। साथ ही साथ भविष्य में ऐसा न हो, ऐसा ध्यान रखे वरना भारत सरकार भी कार्यवाही से हिचकिचायेगी नहीं। सिख समुदाय को पूरे विश्व में बहादुरी और सेवा कार्यों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। ऐसे समुदाय को पाकिस्तान या विश्व मे कहीं भी प्रताड़ित किया जाए, यह बात न हिन्दू समाज को न भारत सरकार को और न ही पूरे विश्व को मान्य होनी चाहिए। नागरिकता संशोधन कानून का विरोध करने वाले लोगों के लिए एक वाक्य का प्रयोग किया गया था- इसके विरोधी यह भी समझने के लिए तैयार नहीं है कि कौन पीड़ित और प्रताड़ित है और कौन अत्याचारी और आततायी। यह विषय इतना व्यापक रूप ले लेगा इसकी उस समय कल्पना नहीं थी। अभी पूरे महीने सारे मीडिया पर यही एक विषय हावी है। लगता है इसके विरोध के बहाने केन्द्रीय सत्ता के सभी विरोधी एकजुट हो गए हैं। जैसे वे मोदी के पुनः केन्द्रीय सत्ता में आने पर अपनी बौखलाहट निकालने का कोई बहाना ढूढ़ रहे हों। तोड़फोड़, आगजनी, सरकारी सम्पत्ति को नुकसान पहुंचाना, पुलिस बल पर हिंसक आक्रमण, सभी कुछ अवांछनीय हो रहा है। सत्ता विरोधी दल इस हिंसाचार को उकसा रहे हैं। इसी बीच उत्तर प्रदेश व असम के पुलिस महानिदेशक रह चुके श्री प्रकाश सिंह का एक लेख जागरण के तीन जनवरी के अंक में प्रकाशित हुआ है। इस लेख में उन्होंने इस विषय के विभिन्न आयामों पर संतुलित प्रकाश डाला है। पाठकों के लिए हम वह लेख ज्यों का त्यों नीचे दे रहे है। सभी तरु इस पर गहन मनन-चिन्तन होना आवश्यक है। ◆◆◆

Dr. Hem Raj Sharma
Specialist in Kshar Sutra Therapy
(Piles, Fistula, Anal Polyps, Prolapse Rectum, Pilonidal Sinus)
Formerly Incharge Medical Officer,
DAH Una, Govt. of Himachal Pradesh
NATIONAL CHIKITSAK GURU
RAV (National Academy of Ayurved) New Delhi
Under Ministry of Health & Family Welfare, Deptt. of Ayush, Govt. of India.
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः"
JAGAT HOSPITAL
&
Kshar Sutra Centre
Near Govt. College, Nangal Road, Una (H.P.)
Pin : 174303
94184-88660, 88940-68358, 94593-88323

सेवाभावी अमूल्य रतन डोगरा का अवसान

रत्न चन्द डोगरा जी का निधन 10 जनवरी 2020 को हुआ। मेरे जीवन में फरवरी1983 में उस समय आए जब में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में फागली शाखा में उस समय के साथी सर्व श्री नरेंद्र दीक्षितजी , उत्तम शर्मा जी, गुलशन लम्बरदारजी, मदन राणा जी और अन्य कुछ बंधुओं के साथ सक्रिय सहभागी बना। डोगराजी उन दिनों ए जी हिमाचल ऑफिस में कार्यरत थे। जब भी कहीं संघ की बैठक होती थी तो डोगरा जी और उत्तम जी या नरेंद्र जी मुझे विशेष आग्रह कर उस बैठक में उपस्थित रहने की सूचना देने आते थे। मैं नया नया सक्रिय हुआ था। बैठक में आने जाने का अनुभव था नहीं। डोगरा जी बैठक के बाद मेरे साथ कुछ समय जरुर अकेले में ले जा कर लम्बी बात कर संघ के बारे में विस्तार से बात करना नहीं भूलते थे। वे इतने अनुशासन प्रिय थे कि दिये गये समय से कुछ मिन्ट पहले पहुंचने पर उन का विशेष आग्रह रहता था। जब कभी लेट हो जाएँ तो देरी के लिए जरुर पूछताछ करते थे। उन की इसी बात की बजह से हम सब साथियों में यह समय पर आने का एक पक्का नियम सा बन गया। बैठक में डायरी लेकर आना, वांछित जानकारी का होना और आती बार बताए गये साथी को साथ लेकर आने का इन का आग्रह रहता था जिस के कारण फागली के सभी साथियों का सबंध एक परिवार के सदस्यों की तरह हो गया। जिस दिन डोगरा जी ने शाखा में आना होता था उस दिन शायद ही कोई साथी लेट आता होगा। जब आप सेवानिवृत्त हुए तो उस के बाद पूर्णकालिक कार्यकर्ता के रुप में लम्बे समय तक संघ का दायित्व भिन्न-भिन्न पदों पर बड़े प्रभारी रुप से निभाया। पैदल चलने पर उन का बहुत जोर रहता था।

एक बार उन से पैदल चलने के बारे में पूछा तो उन्हों ने इस को भी संघ के कार्य विस्तार से जोड़कर जो तर्क दिया बह भूले नहीं भूलता। उन के साथ बिताए लंम्बे बहुत याद आते हैं। दो महीने पहले जब मैं उन्हें आखिरी बार मिला तो पहचाना नहीं तभी मुझे अनहोनी का अंदेशा हो गया था। उन के जाने से मैंने और मेरे जैसे कई साथियों ने अपने पिता तुल्य वरिष्ठ साथी को खोया है। भगवान उन की पुण्य आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें। ◆◆◆

चम्बल घाटी के सर्वोदयी नेता कृष्ण चन्द्र सहाय का निधन

चम्बल घाटी शान्ति मिशन के वरिष्ठ गांधीवादी कार्यकर्ता तथा गोवा मुक्ति आंदोलन के स्वतन्त्रता सेंनानी श्री कृष्ण चन्द्र सहाय का अभी हाल ही में निधन हो गया। उनकी आयु 85 वर्ष थी। उनका जन्म कानपुर जिले के अकबरपुर में एक निर्धन परिवार में हुआ था। श्री सहाय सोशलिस्ट पार्टी में रहकर कई बार जेल गये। फिर राजनीति से मोह भंग हुआ और गांधीवादी आन्दोलनों में लग गए। वर्ष 2014 में राजस्थान सरकार ने उन्हें गोवा मुक्ति आंदोलन का स्वतन्त्रता सेनानी घोषित किया था।

श्री सहाय की सन 1960, 1972 एवं 1976 में चम्बल घाटी के दस्युओं को आत्मसमर्पण कराने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। चंदन तस्कर वीरप्पन का समर्पण कराने का प्रयास किया था। श्री सहाय बचपन से ही अनीश्वरवादी हो गये थे, इसलिए मृत्युपूर्व लिख गये थे कि

कर्मकाण्ड से मुक्त होकर मेरा मृत शरीर मेडिकल कालेज को दान कर दिया जाये, जिसके लिए वह क्रमशः आगरा तथा जयपुर में देहदान का संकल्प पत्र भर गये थे। ◆◆◆

नहीं रहे वरिष्ठ पत्रकार और संपादक, अश्विनी कुमार चोपड़ा

वरिष्ठ पत्रकार व पंजाब केसरी दिल्ली के संपादक अश्विनी कुमार चोपड़ा के निधन पर पत्रकार जगत में मूल्य आधारित पत्रकारिता व मानदंड स्थापित करने वाले संघर्षशील व जुझारू आवाज की रिक्तता को भरा नहीं जा सकता। लाला जगत नारायण और उनका परिवार समाजसेवी व सजग पत्रकारिता के लिए जाना जाता है। हिमाचल इकाई ने गहरा शोक जताया है। विश्व संवाद केन्द्र, शिमला के प्रमुख दलेल सिंह ठाकुर ने उनके निधन पर शोक प्रकट किया है। वह 16वीं लोकसभा में करनाल से सांसद चुने गए थे, वहीं गरीबों, पिछड़ों व दलितों की आवाज उठाने में हमेशा आगे रहे। अश्विनी चोपड़ा अपने वेबाक लेखों व पत्रकारिता के लिए जाने जाते थे। वहीं उन्होंने ताउम्र मूल्यों तथ्यों पर आधारित पत्रकारिता को हमेशा प्राथमिकता दी। ◆◆◆

मानवाधिकार मंच ने उच्च न्यायालय परिसर में
नागरिकता संशोधन कानून पर आयोजित की संगोष्ठी

पूरे देश में कुछ लोग राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए नागरिकता कानून के नाम पर भ्रम फैला रहे है। नागरिकता संशोधन कानून में किसी भी नागरिक से नागरिकता नहीं छिनेगी बल्कि इस कानून से सताये गये लोगों को मानवीय आधार पर नागरिकता मिलेगी। यह विचार सेवानिवृत पूर्व अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक के.सी. सडियाल ने उच्च न्यायालय परिसर में आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किये।

यह संगोष्ठी नागरिकता संशाधन विधोयक-2019 कानून के बारे में वास्तविक जानकारी प्रदान करने के लिए आयोजित की गयी थी। इस कार्यक्रम में मुख्य वक्ता सेवानिवृत्त पूर्व अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक के.सी. सडियाल रहे जबकि कार्यक्रम अध्यक्ष प्रदेश महाधिवक्ता अशोक शर्मा उपस्थित हुए। अपने उद्बाधन में मुख्य वक्ता सडियाल ने कहा कि तीन देशों में हिन्दुओं की संख्या में लगातार गिरावट आयी। उन्होंने 1952 में नेहरू लियाकत समझौते का जिक्र करते हुए कहा कि उस समय भारत और पाकिस्तान में इस बात पर सहमति बनी थी कि दोनों देश अपने अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा करेंगे। भारत ने तो इस समझौते का पालन किया जबकि पाकिस्तान ने लगातार समझौते के प्रावधानों का उल्लघंन किया। पाकिस्तान, बंगलादेश और अफगानिस्तान में हिन्दुओं की स्थिति बहुत ही दयनीय हो गयी थी। वहां पर खुलेआम मानव अधिकारों का उल्लघंन हो रहा था। हिन्दुओं को अगर शादी भी करनी होती थी तो उनको बंद कमरे में सारी रस्मों एवं रिवाजों को पूरा करना पड़ता था। इसके साथ ही इन देशों में हिन्दुओं का जबरन धर्मांतरण भी करवाया जाता रहा जिससे वे वहां पर बुरी तरह से प्रताड़ित हो रहे थे। उन्होने कहा कि जो भी घुसपैठिया भारत में अवध रूप से घुस गया यह कानून उनको वापिस भिजवाने का काम करेगा। उन्होंने राजनीतिक लाभ के लिए इस कानून का विराध करने वालों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि कुछ लोग देश से उपर केवल अपने स्वार्थों की चिंता करते हैं जिस कारण वे इस कानून के नाम पर भ्रम फैलाने का काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि बेशक केंद्र सरकार को इसके बाद उपद्रव भनक नहीं लगी लेकिन वर्ष 2014 से अब तक देश में कानून व्यवस्था में कफी सुधार हुआ है उसी का परिणाम है सीएए के नाम पर उपद्रव करने वाले करीब 2000 उपद्रवियों को नोटिस किए जा चुके हैं, जिनसे भविष्य में नुकसान की उगाही भी संभव है।

कार्यक्रम अध्यक्ष अशोक शर्मा ने कानून के प्रावधानों को बड़े विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि यह कानून भारत के किसी भी नागरिक के विरोध में नहीं है। उन्होंने बताया कि देश का संविधान सर्वोच्च है अगर किसी को इस कानून के प्रावधानों से कोई आपति है तो इसके लिए वह संविधान के तहत शांतिपूर्वक अपना प्रतिराध जता सकता है। उन्होंने सीएए के नाम पर देश में हुई हिंसा पर नाराजगी जताते हुए कहा कि विराध के नाम पर किसी भी प्रकार की हिंसा को जायज नहीं ठहराया जा सकता। कार्यक्रम में कानूनी व्यवसाय से जुड़े अनेक कानूनविद् और अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे। ◆◆◆

सूचना

आगामी वर्ष 2020 हेतु मातृवन्दना के प्रतिपदा विषेशांक व कैलेण्डर का विषय 'समरसता की वाहक लोक संस्कृति' रहेगा। सुधी लेखकों, रचनाकारों, कवियों से अनुरोध है कि वे हिमाचल प्रदेश की लोक-परम्पराएं, लोकोत्सव तथा मेले सामाजिक समरसता में किस तरह से सहायक हैं, उक्त विषय पर समाज बान्धवों व स्वयं के अनुभव भी अपने लेख में शामिल किये जा सकते हैं। कृपया अपनी रचनाएं 10 मार्च 2020 तक संपादक मातृवन्दना के पते पर भेजकर कृतार्थ करें।

CAA मामला उतना सीधा भी नहीं जितना बताया जा रहा

-अभिजीत भोले

कैब (सीएबी) यानी अब सीएए पर संसद में बहस में दोनों पक्ष सरकार और प्रतिपक्ष जितनी सरल शब्दों में इसकी व्याख्या कर रहे थे असल में मामला उतना सीधा है नहीं। असल बात दोनों पक्षों ने छिपा ली। पक्ष ने अपना दूरगामी लक्ष्य छिपा लिया और विपक्ष ने अपनी हार की तिलमिलाहट छिपाने के लिए संविधान की आड़ ले ली। कुछ बिंदुवार समझने की कोशिश करते हैं।

सीएए के माध्यम से सरकार ने पाकिस्तान और बांग्लादेश के वृषण भाग (अंडकोष) पर ऐसा घुटना मारा है जिससे ये तिलमिला तो गए हैं, लेकिन अपना दर्द नहीं बयां कर पा रहे हैं। सरकार ने ये बिल लाकर बिना इनका नाम लिए बिना पूरी दुनिया को बता दिया, कि इन देशों में अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न हो रहा है।

बिल पास होते ही बांग्लादेश को दुनिया के सामने अपनी इज्जत बचाने के लिए कहना पड़ा,कि वह अपने सभी नागरिकों को वापस लेने के लिए तैयार है। उसने स्वीकार भी किया कि उसके यहां अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न हुआ है। कश्मीर में उत्पीड़न का आरोप लगाने वाले पाकिस्तान ने ऊल-जुलूल बयान दिया लेकिन यूएन की रिपोर्ट ने उसकी पोल खोल दी। इस बिल के आने से पाकिस्तान और बांग्लादेश में जो अल्पसंख्यकों का उत्पीड़न हो रहा था वह अब एक दस्तावेजी रिकॉर्ड बन गया है, जुबानी जमा खर्च नहीं है। भारत में जितने लोगों को यहां नागरिकता दी जाएगी ये दोनों देश उतने ही एक्सपोज होंगे। इस बिल के पास होने के बाद ही बांग्लादेश ने रोहिंग्याओं को वापस लेने के लिए म्यांमार पर दबाव बना शुरू कर दिया है। इस बिल के आने के बाद भारत में रह रहे तमाम अल्पसंख्यक पीड़ित खुलकर बता सकेंगे कि वे किस देश से आए हैं, इससे इन देशों की और पोल खुलेगी। इसके चलते इनको अपने यहां उन कट्टरपंथी ताकतों के खिलाफ खड़ा होना पड़ेगा, जिनका उपयोग ये दोनों देश भारत को ब्लैकमेल करने के लिए करते हैं। विपक्ष ने क्या छिपाया अपना दर्द विपक्ष को पता है कि इसका भारत के नागरिकों पर असर नहीं पड़ने वाला लेकिन 370, राम मंदिर, तीन तलाक पर प्रतिरोध न होना, सब कुछ शांति से निपट जाने पर विपक्ष कफी चकित था, उसे इस तरह का निष्कंटक राज पसंद नहीं आ रहा था। इसलिए उसने एनआरसी का डर दिखाकर लोगों को भड़काया, लेकिन देश में इतनी हिंसा हो गई इससे विपक्ष का ये पासा भी उल्टा ही पड़ता दिखाई दे रहा है। अमित शाह का ये कहना कि रोहिंग्या को हम रहने नहीं देंगे, एनआरसी तो हम लेकर ही आएंगे। भारत में पिछले 70 साल में इतनी स्पष्टता से संसद में किसी नेता ने भाषण नहीं दिया था। इस भाषण से देश के बहुत से स्वयंभू लोगों ने खुद को बहुत अपमानित महसूस किया, उनकी अकड़ को ठेस पहुंची। मौलाना, पर्सनल लॉ बोर्ड, फतवेबाजों के फफोले भी इस बिल के माध्यम से फूट पड़े जो पिछले कई महीनों से इस सरकार की कारगुजारियों से कलेजे में पड़े हुए थे। इन्हें अपनी भड़ास निकालने का मौका मिल गया।

अब आगे क्या

मौलानाओं, धर्म के ठेकेदारों, पर्सनल लॉ बोर्ड जैसी अवैध संस्थाओं को डर है कि ये सरकार कॉमन सिविल कोड, जनसंख्या नियंत्रण कानून, एनआरसी पर बहुत तेजी से काम कर सकती है, इसलिए इसका एक ही उपाय है हिंसा। हिंसा फैलाकर देश-दुनिया का ध्यान खींचो, सरकार अपने आप कदम पीछे खींच लेगी। सरकार इसको लिटमस टेस्ट भी मान सकती है क्योंकि 370, राम मंदिर, तीन तलाक पर जिस तरह से शांति रही थी, उससे सरकार मुगालते में आ गई थी, अब सरकार आगे की चीजों को करने से पहले अपनी जरूरी तैयारी करके रखेगी। अब शायद हिन्दू बोलते ही चीखने, हिंसा करने वालों को शायद समझ में आ जाए कि एक तो चीखने का कोई फायदा नहीं, दूसरा आप लोग एक्सपोज हो चुके हो और तीसरा इस देश के नागरिक हिन्दू भी हैं, उनके लिए भी कुछ करने की जिम्मेदारी सरकार की है, सिर्फ एक ही समुदाय का तुष्टिकरण नहीं किया जा सकता। इस सख्ती का तात्कालिक फायदा ये होता दिख रहा है कि फिलहाल बाकी देशों से घुसपैठिए थोड़ा ठिठकेंगे, जो खिसक सकते हैं वे तुरंत यहां से खिसकेंगे।

भारत को सराय समझने वाले यहां आने से पहले दस बार सोचेंगे। पड़ोसी सरकारें भी शायद हमारी सरकारों को गंभीरता से लेने लगेंगी, क्योंकि अब चीजें रिकॉर्ड पर आएंगी, हवाई किले बनाने के दिन लद गए। ◆◆◆

डॉ. अंजलि वर्मा राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित

प्रदेश विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग की शिक्षिका डॉ. अंजलि वर्मा को केरल में 28 से 30 दिसंबर तक आयोजित इंडियन हिस्ट्री कांग्रेस कार्यक्रम में राष्ट्रीय पुरस्कार से नवाजा गया। उनकी लिखि पुस्तक वुमन एंड सोसाइटी इन अरली मिडिवल इंडिया: रीइंटरप्रेटिंग एप्रिग्राफस के लिए केरल में बृज देव प्रसाद मेमोरियल पुरस्कार दिया गया। न्यूयार्क और लंदन में इस पुस्तक को खूब सराहा गया। भारत में भी फरवरी 2019 से किताब की खूब बिक्री हुई है। डॉ. अंजलि वर्मा की किताब में इतिहास के विपरीत महिलाओं की स्थिति के बारे में बताया गया है। डॉ. अंजलि ने 650 से अधिक अभिलेखों के आधार पर बताया कि 600 से 1200 ईसवी पूर्व तक भारत में महिलाओं की स्थिति सम्मानजनक थी। इतिहास और साहित्य में इसके विपरीत इस समय महिलाओं की स्थिति खराब बताई गई है। इसलिए इतिहासकारों ने महिलाओं के मान-सम्मान के लिहाज से इसे अंधकारमय काल बताया है। डॉ. अंजलि वर्मा ने बताया कि उन्होंने पुस्तक में उन अभिलेखों का हवाला दिया है, जो उन्हें जम्मू कश्मीर, हिमाचल, हरियाणा, राजस्थान सहित गुजरात दक्षिण भारत सहित पूरे भारत में मिले हैं। इतिहास को दोबारा लिखकर बदला जा सकता है, मगर अभिलेख सही मायने में समय की असली जानकारी देते हैं। डॉ. अंजली पूर्व में डीसी मंडी रहे डीपी वर्मा की बेटी हैं। वर्ष 1996 में एचपीयू की छात्रा रहीं और 2016 में विवि में सहायक आचार्य के पद पर नियुक्ति हुई। वह नालागढ़ की रहने वाली हैं। ◆◆◆

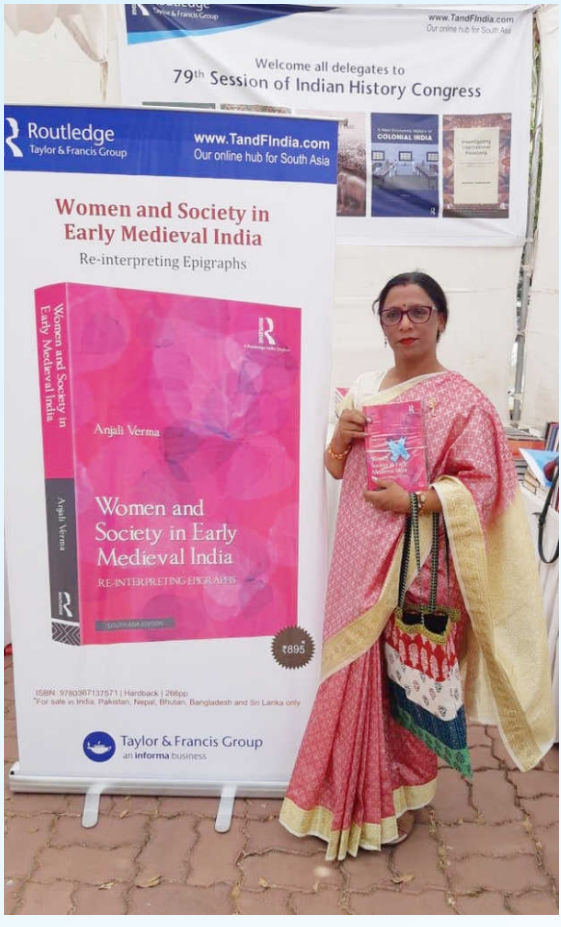

फेसबुक पर भगवान राम पर आपत्तिजनक टिप्पणी पर बवाल

हिमाचल में शिमला के ठियोग में फेसबुक पर भगवान राम पर अभद्र टिप्पणी करने से लोगों में भारी रोश व्याप्त है। मामला यह है कि मतियाना के एक व्यक्ति ने डेढ़ साल पहले फेसबुक पर एक पोस्ट डाली थी जिसमें भगवान राम का अपमान किया गया था। उस समय इसका स्थानीय स्तर पर विरोध भी किया गया था लेकिन फिर भी इसे फेसबुक से उक्त व्यक्ति ने नहीं हटाया था। इसी पोस्ट को अभी कुछ दिन पहले किसी व्यक्ति द्वारा भोयर किया गया जिसके बाद यह सो ाल मीडिया में फिर से चलने लगी। इस पोस्ट को जब स्थानीय महिला सरिता वर्मा ने देखा तो उनको बहुत दुख हुआ और उन्होंने स्थानीय ठियोग थाने में इसको लेकर प्राथमिकी दर्ज की है। धर्म जागरण मंच की ठियोग इकाई ने भी इस घटना का विरोध किया है। उनका कहना है कि यहां पर काफी समय से ऐसे कई लोग सक्रिय हैं जोकि हिन्दू देवी देवताओं पर सो ाल मीडिया में आपत्तिजनक पोस्टें डाल रहे हैं। धर्म जागरण मंच की बात मानें तो इस प्रकार के मामलों पर पहले भी ठियोग थाना में एफआईआर दर्ज की जा चुकी है। मंच का कहना है कि इससे पूर्व देवी दुर्गा मां पर भी कई प्रकार की आपतिजनक टिप्पणियां कुछ असामाजिक तत्वों द्वारा की गयी हैं जिसको लेकर अब तक कोई ठोस कार्यवाही नहीं हुई है जिससे ऐसे तत्वों का मनोबल बढ़ा हुआ है। उन्होंने प्र ाासन से मांग की है कि ऐसे लोगों की जल्द से जल्द पहचान करके उनके विरूद्ध कड़ी कारवाई की जाये।

जातिगत विषयों पर भी किया जा रहा है लोगों को गुमराह

मंच के समन्वयक सुन्दर का कहना है कि इस प्रकार के कई असामाजिक तत्व जातिगत विद्वेशों के नाम पर समाज को तोड़ने में लगे हुए हैं। उनका कहना था कि यही तत्व पहले धार्मांतरण के लिए कार्य कर रहे थे। उन्होंने ठियोग के मन्दिरों में जातिगत स्तर पर प्रवे ा न दिये जाने की बात को खारिज करते हुए कहा कि कुछ लोग इस प्रकार की बातों को आधार बनाकर अफवाहें फैलाते हैं ताकि समाज को तोड़ा जा सके। ◆◆◆

Shehzad Jai Hind @Shehzad_... · 5h
जैदी किस सोच का "क़ैदी" है दिख रहा है! पर पत्रकारों को भडवा कहने की , भद्दी गालीयाँ देने की आदत बन चुकी है लेफ़्ट और कोंग्रेस की! और जिन तथाकथित उदारवादी बुद्धिजीवियों को presstitute शब्द से आपत्ति थी अब मौन है ! अद्भुत !
Deepak Chaurasia @DC... · 19h
जब किसी संगठन की वैचारिक तर्कशक्ति मर जाती है, तो वो गाली-गलौच पर आ जाता है! मुझे गाली देने से आपका स्वास्थ्य अच्छा होता है तो और दीजिये । लेकिन जैदी साहब, बच्चों के दिमाग में अपनी मानसिक कुंठा मत भरिए!...
बच्चों के दिमाग में किसने बोया 'ज़हर'
बच्चों का ब्रेनवॉश, विरोध का ब्रह्मास्त्र!
54
601
@KapilMishra_I... · 6h
संविधान की आड़ में बसों में आग लगाने वा
Romana Isar Khan @rom
#तिरंगे , #संविधान और #भारत_मां
#पाकिस्तान_खोजने वालो को
#वोट_मुबारक twitter.com
KapilMishra_IN...
459
Anand Ranganath
Rahul Rousha
Congratulat
Home
Chitra Subramaniam @chitr... · 18h
Appalling comments from #naseeruddinshah who obviously doesn't know that @AnupamPKher has friends who know him as a person they can turn to in their most difficult moments. In #India and in #America.
Anupam Kher @AnupamP... · 1d
जनाब नसीरुद्दिन शाह साब के लिए मेरा प्यार भरा पैग़ाम!!! वो मुझसे बड़े है। उम्र में भी और तजुर्बे में भी। मै हमेशा से उनकी कला की इज़्ज़त करता आया हूँ और करता रहूँगा। पर कभी कभी कुछ बातों का दो टूक जवाब देना बहुत ज़रूरी...
11
30
नरेन्द्र कौशिक Retweeted
Yogeshwar Dutt @DuttYogi · 21h
उसको नही कहेंगे पर तुम तो टुकड़े टुकड़े गैंग के होना आचार्य लिखने से कोई आचार्य नही होता ढोंगी बाबा
#हम_तो_कागज_दिखायेंगे
Acharya Pramod @Achar... · 1d
तुम मुझे "ख़ून" दो मैं तुम्हें "आज़ादी" दूँगा का उद्घोष करने वाले, नेताजी सुभाष चंद्र बोस के पोते C.K Boss ने भी CAA और NRC का विरोध किया है, क्या अब उन्हें भी टुकड़े टुकड़े गैंग का मेंबर और देश द्रोही कहा जायेगा............
5,957
News18 India @News18India · 6h
निर्भया की मां ने दिया कंगना का साथ, कहा- मैं मां हूं लेकिन महान नहीं बनना चाहती
निर्भया की मां ने दिया कंगना का साथ, कहा- मैं मां हूं लेकिन महान नहीं बनना चाहती | delhi-ncr -...
hindi.news18.com
सीएम योगी ने CAA हिंसा पर वसूली की कार्वाई तेज करने के दिए आदेश, कहा- किसी को भी नहीं बक्शना
@myogioffice @CMOfficeUP
सीएम योगी ने CAA हिंसा पर वसूली की कार्वाई तेज करने के दिए आदेश, कहा- किसी को भी न...
breakingtube.com
Shivraj Singh Chouhan @Cho... · 1h
मानवरहित मिशन में भेजी जाने वाली ह्यूमनॉइड #व्योममित्रा को देखकर अत्यधिक गर्व और आनंद हो रहा है। अंतरिक्ष के क्षेत्र में भारत ने यह एक और उपलब्धि हासिल की। @isro के वैज्ञानिकों और टीम के हर सदस्य के साथ भारत के प्रत्येक नागरिक को बधाई। देश बढ़े, गौरव बढ़े, शुभकामनाएं!
#Vyommitra
ANI_HindiNews @AHindine... · 2h
फ़ैज़ुल हसन AMUSU के पूर्व अध्यक्ष: सब्र की अगर सीमा देखना चाहते हैं तो 1947 के बाद 2020 तक हिंदुस्तानी मुसलमानों के सब्र की सीमा देखिए। कभी कोशिश नहीं की कि हिंदुस्तान टूट जाए वरना हम उस कौम से हैं कि...
109
917
Jai Prakash Shah(I Suppo
richa anirudh
बेहद अफसोस हुआ नस
कलाकार का वीडियो
Shefali Vaidya @ShefVaidya · 2h
97.9K views · From Vasudha
Sudarshan News @Sudarshan... · 43m
कंधे पर लादकर गर्भवती महिला को अस्पताल ले गए #CRPF के जवान..
@crpfindia
VIDEO: दिल्ली मेट्रो के अंदर JNU और जामिया के छात्रों ने लगाए PM मोदी और अमित शाह के...
hindi.opindia.com
डीडी न्यूज़ @DDNewsHindi · 1h
#coronavirus

कर्तव्य

एक समय की बात है । एक नदी में एक महात्मा स्नान कर रहे थे । तभी एक बिच्छू जो पानी में डूब रहा था, उसे बचाते हुए बिच्छु ने महात्मा को डंक मार दिया । महात्मा ने उसे कई बार बचाने की कोशिश की । बिच्छू ने उन्हें बार ख्र बार डंक मारा।

अंततः महात्मा ने उसे बचाकर नदी के किनारे रख दिया । थोड़ी दूर खड़े यह सब महात्मा के शिष्य देख रहे थे । जैसे ही वे नदी से बाहर आये तो शिष्यों ने पूछा कि जब वह बिच्छू आपको बार ख्र बार डंक मार रहा था तो आपको उसे बचाने की क्या आवश्यकता थी ।तब महात्मा ने कहा ख्र बिच्छू एक छोटा जीव है, उसका कर्म काटना है, जब वह अपना कर्तव्य नहीं भूला, तो मैं मनुष्य हूँ मेरा कर्तव्य दया करना है तो मैं अपना कर्तव्य कैसे भूल सकता हूँ । कर्तव्य की कहानी से सीख Moral Of Kartvya Ki Kahani : इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि मार्ग कितना भी कठिन क्यों न हों । मनुष्य को कभी अपना कर्तव्य नहीं भूलना चाहिए। ◆◆◆

विनम्रता

डॉ महेन्द्रनाथ सरकार कलकत्ता (कोलकाता) के एक बहुत प्रसिद्ध और धनी डॉक्टर थे। एक बार वे सुप्रसिद्ध संत श्री रामकृष्ण परमहंस से मिलने गए। उस समय परमहंस जी बगीचे में टहल रहे थे। वे इतने सीधे और सादगी से भरे थे कि डॉ. सरकार ने उन्हें माली समझा। सरकार ने आवाज लगाकर कहा ऐ माली ! थोड़े से फूल तो लाकर दे। परमहंस जी को भेंट करने हैं। परमहंस जी ने तुरंत ही अच्छे-अच्छे फूल तोड़कर उन्हें दे दिए। थोड़ी देर बाद सत्संग शुरू हुआ। डॉ सरकार लज्जा से भर गए। जिसे उन्होंने माली समझा था, वे तो स्वयं परमहंस जी ही थे। उनकी इस विनम्रता से डॉ. सरकार आश्चर्यचकित रह गए। ◆◆◆

पहेलियों के उत्तर:- 1. कलम 2. पपीता 3. सुराही 4. चना 5. मलयालम 6. अनाड़ी

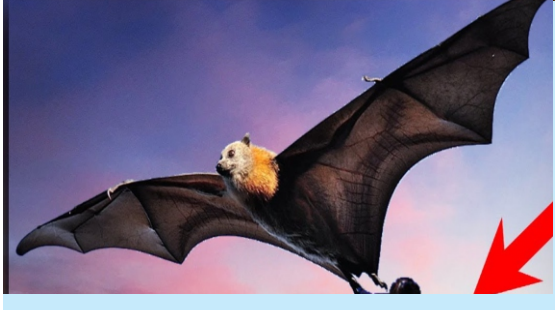

प्रश्नोत्तरी के उत्तर:-
1. व्योममित्र 2. एकातेरिनी केल्लापोउलो 3. अलईका शर्मा 4. जयप्रकाश नड्डा 5. विवादित फिल्म छपाक के कारण 6. अजय देवगन 7. प्रोफेसर एसपी बंसल 8. प्रेम सिंह 9. हिम प्रगति 10. शारंग 11. जाइर बोल्सोनारो 12. कोरोना 13. स्विटजरलैण्ड 14. ईस्ट कोस्ट रेलवे 15. सैमसंग ने।

उल्लू और चमगादड़'

किसी बस्ती में एक उल्लू रहता था। उसकी बोली लोग बड़ी अशुभ समझते थे। इसीलिए कोई भी उसे अपने पास न आने देता था। जैसे ही वह बोलता, लोग उसे भगा देते थे।

बस्ती वालों के इस व्यवहार से उल्लू बड़ा दुखी रहने लगा। एक दिन वह अपनी सहेली चमगादड़ से बोला- 'बहिन, मेरी आवाज कोई सुनना नहीं पसंद करता। लोगों के इस व्यवहार से मुझे बड़ा दुःख होता है। मैं यह स्थान छोड़कर जा रहा हूँ।' चमगादड़ उसे समझाते हुए कहने लगी - 'मित्र, परिस्थितियाँ तो सब जगह एक सी ही हैं। अपनी आवाज के कारण तो तुम जहाँ भी जाओगे, तिरस्कार पाओगे। अच्छा तो यही है कि तुम लोगों की निंदा से प्रभावित न होओ। तुम अपने चिंतन को संतुलित रखो। सद्गुणों को अपनाओ। यही सुखी और सफल जीवन का रहस्य है।' ◆◆◆

प्रश्नोत्तरी

1. गगनयान मिशन के साथ जाने वाला महिला रोबोट का नाम क्या है?
2. यूनान की प्रथम महिला राष्ट्रपति कौन चुनी गई हैं?
3. इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर राष्ट्रीय बाल बहादुरी पुरस्कार हि. प्र. से किसे प्राप्त हुआ है?
4. सत्तारूढ़ दल भाजपा का राष्ट्रीय अध्यक्ष किसे चुना गया है?
5. प्रसिद्ध फिल्म तानाजी में तानाजी की भूमिका निभाने वाले अभिनेता का नाम क्या है?
6. 10 अप्रैल को रिलीज होने वाली फिल्म '83' पहले से ही विवादित क्यों है?
7. एआईसीटीई ने हॉस्पीटलिटी और पर्यटन प्रबंधन बोर्ड का अध्यक्ष किसे बनाया है?
8. दो बार चोटी एवरेस्ट को फतह करने वाले व्यक्ति कौन हैं?
9. कम्प्यूटर सोसायटी ऑफ इंडिया ने प्रदेश के किस पोर्टल को उत्कृष्टता पुरस्कार दिया है?
10. ऑर्डिनेंस फैक्ट्री कानपुर द्वारा निर्मित स्वदेशी तकनीक की देश की सबसे बड़ी तोप का क्या नाम है?
11. इस वर्ष गणतंत्र दिवस पर मुख्य अतिथि कौन हैं?
12. चीन में किस खतरनाक वायरस के फैलने के कारण तीन शहर सील किए गए हैं?
13. अभी हाल ही में किस देश ने सोने का सबसे छोटा सिक्का बनाया है?
14. ई-वेस्ट से डीजल बनाने का संयंत्र कहां प्रारम्भ होगा?
15. भारत का पहला दही जमाने वाला रेफरीजरेटर किसने बनाया है?

पहेली

1. अंत करें तो पुर्जा बनूं, मध्य कटे आऊं।
   सिर काटो तो मैं चलूं, अपने तेवर दिखलाऊं।
2. अन्त कटा तो 'पपी' रहा, कुछ भी मतलब नाय।
   आदि काटकर ठीक है, पीता-पीता जाय।
   मध्य कटे झट जान लो, तुरंत 'पता' लग जाए।
3. तीन अक्षर का नाम मेरा, ग्रीष्म ऋतु में मेरा काम।।
   प्रथम हटा दो सफर करूं, अंत हटा दो 'डफर' बनूं।
   यात्री को कहते हैं और सुरा पीकर बुद्धि नाश होता है!
4. दो अक्षर का मेरा नाम, आता हूं खाने के काम।
   उलटा लिखकर नाच दिखाऊं, फिर क्यों अपना नाम छिपाऊं?
5. पांच अक्षर का मेरा नाम, उलटा सीधा एक समान।
   दक्षिण भारत में रहती हूं, बोलो तो मैं कैसी हूं?
6. मध्य कटे, तो अड़ी पड़ी, प्रथम काट दो तो नाड़ी।
   अन्त कटे, तो 'अना' हुआ, न जानूं मैं होशियारी।

चुटकुले

बचपन में जब हम दोस्तों को बुलाने
उनके घर जाते थे
तो सबसे पहले उनके मम्मी या पापा
निकलकर ऐसा घूरते थे
जैसे हम तालिबान से ताल्लुक रखते हों
इतने साल हो गए कुछ नहीं बदला
बस बदलाव आया तो सिर्फ इतना कि
अब दोस्तों की पत्नियां घूरती हैं!

जब मैं पैदा हुआ तो फरिश्ते बोले
हमारा एक और भाई आ गया!
और जब तू हुआ तो शैतान बोले
'अरे यार!! हमारी लाईन में बढ़ता ही जा रहा है।'

राजनीतिक पार्टियां आज हैं, कल नहीं।
पुरानी पार्टियां कल थीं, आज नहीं।
लेकिन.. समाज और दोस्त कल भी था
आज भी है और कल भी रहेगा,
इसलिए..
पार्टियों से ज्यादा
समाज और दोस्त.. के साथ रहिए।

पप्पू समोसे को खोलकर
अंदर का मसाला ही खा रहा था।
फेंकू- अरे! तू पूरा समोसा क्यों नहीं खा रहा?
पप्पू- अरे मैं बीमार हूं ना...
इसलिए डॉक्टर ने बाहर की चीज खाने से मना किया है।

ठाकुर राम सिंह सरस्वती विद्या मन्दिर छात्रावास
Thakur Ram Singh Saraswati Vidya Mandir Hostel

हिमाचल शिक्षा समिति द्वारा संचालित व सम्बद्ध विद्याभारती

वरिष्ठ माध्यमिक आवासीय विद्यालय ''हिम रश्मि परिसर'' विकासनगर शिमला, हिमाचल प्रदेश-171009 (भारत)

Sr. Sec. Residential School Him Rashmi Parisar, Vikasnagar Shimla, H.P. 171009 (India)

दूरभाष : 0177-2625467, 2622308, 82193-74708 E-mail: svmhimrashmi @gmail.com

प्रवेश /पंजीकरण 2020-2021 प्रारम्भ
Admission/Registration 2020-2021

छात्रावास सुविधा केवल कक्षा 6ठी से 12वीं तक भैया के लिए

Hostel Facility Only for Boys 6th to 12th Class)

11वी व 12 वीं कक्षा विज्ञान व वाणिज्य

Medical/Non-Medical Commerce

सम्पर्क सूत्रः-	कार्यालय प्रमुख	छात्रावास प्रमुख	प्रधानाचार्य	छात्रावास सचिव
	0177-2622308, 2625467	82193-74708	98178-73895	94185-73639

Registration/Admission Open for Classes IV to X

Boy's Residential School, Co-Education for Day Scholars Only

A Culture Oriented English Medium School

(Affiliated to C.B.S.E. Delhi)

Website: www.ssnkumarhatti.com

Run by:
Himachal Shiksha Samiti Shimla,
(A State unit of Vidya Bharti)

S.S.N.
PUBLIC SCHOOL
KUMARHATTI

Location: The Complex is situated on Barog bye-pass Road.
It is less than 2 km. from KUMARHATTI.

Managed by:
Jindal Charitable Trust
Nabha (Panjab)
01765-326661

J.K. Sharma
Principal
Ph.: 0177-266410, 94185-58030
e-mail: ssnkumarhatti@yahoo.in

अपना आज नशे में न उड़ाएँ,
अपना कल सुरक्षित बनाएँ।

- ठान लें -

जीवन को कहें हाँ
नशे को कहें ना

हिमाचल प्रदेश में 15 नवम्बर से 15 दिसम्बर 2019 तक नशा निवारण के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है।

हम और आप मिलकर बदल सकते हैं तस्वीर
और ला सकते हैं सबके जीवन में
खुशहाली और सुख – समृद्धि।

**आईए प्रण लें, न नशा करेंगे
और न ही करने देंगे।**

जयराम ठाकुर
मुख्यमंत्री, हिमाचल प्रदेश

सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश द्वारा जारी

Designed by : New Era Graphics, Shimla Ph. : 2628276

मातृवन्दना

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, प्लॉट 820, फेस - 2, उद्योग क्षेत्र चंडीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा, शिमला - 171004, से प्रकाशित।

follow us on: YouTube

Posting Date:
1st & 5th of the Month